रबड़ समाचार
बुलेटिन

अप्रैल 2025 - सितंबर 2025

प्रलय-संगीत

आज तो हुंका कर स्वर,
जोर से ललकार कर स्वर,
जागरण-वीणा बजा, उन्मुक्त भरव-राग से, मैं,
गीत गाने को चला हूं।

शीघ्र तोड़े बंधनों को,
तीव्र कर दे धड़कनों को,
वेग से विप्लव मचाकर, सृष्टि कर दे और नूतन,
प्रेरणा दे, वह कला हूं।

प्यार का संसार लाने,
शांति का उपहार लाने,
है युगों से व्यस्त जीवन, ध्येय को कर पूर्ण अर्पण,
साधना में ही पला हूं।

जो विधातक नीति जग की,
स्वांग की जो प्रीति जग की,
आज इनको नष्ट करने का किया है प्रण हृदय से,
ज्वाल रक्षा हित जला हूं।

महेंद्र भटनागर
-चुने हुए राष्ट्रीय गीत से साभार

रबड़ बोर्ड

(वाणिज्य एवं उद्योग मंत्रालय, भारत सरकार)
कोट्टयम - 686 002, केरल
पी बी नं.1122
दूरभाष : (0481) 2301231
ई मेल : ol@rubberboard.org.in
वेब साइट : www.rubberboard.org.in

रबड़ समाचार बुलेटिन

अप्रैल 2025 - सितंबर 2025
अंक 138

कार्यकारी निदेशक
एम वसंतगेशन आई आर एस

संपादक
एम श्रीविद्या
सहायक निदेशक (रा भा)

संपादन सहयोग
सिसिली पी एस
हिंदी सहायक

पत्रिका में अभिव्यक्त विचारों और मतों से रबड़ बोर्ड का सहमत होना आवश्यक नहीं है। बिक्री के लिए नहीं केवल आंतरिक परिचालन के लिए।

यदि हम अपने काम में लगे रहे तो
हम जो चाहें वो कर सकते हैं।
- हेलन केल्लर

मुख पृष्ठ :
रबड़ - फूल और नवांकुर

अंतिम पृष्ठ का चित्रकार -
श्रीमती वर्षा टी एम,
कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1
प्रादेशिक कार्यालय श्रीकंठापुरम

इस अंक में

रबड़ बोर्ड की योजनाओं के लाभ उठाएँ	4
ई यू डी आर - इंडोनेशिया द्वारा की गई तैयारियां	5
रबड़ पत्रिका (मलयालम) का हीरक जयंती समारोह	8
कारगिल युद्ध की यादें (कविता)	11
बोरिगोन की मिट्टी का धूमघर	12
रबड़ उत्पाद इंक्यूबेशन केंद्र (आरपीआईसी) - उद्देश्य एवं गतिविधियाँ	14
पर्यावरण अनुकूल मोज़े	15
केरा परियोजना के कार्यान्वयन के लिए सहमति पत्र पर हस्ताक्षर	16
पिता (कविता)	16
रबड़ शब्दावली	17
राजभाषा सम्मेलन	19
हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन	20
राजभाषा विभाग - स्वर्ण जयंती समारोह, नई दिल्ली	21
विद्यालयों के छात्रों के लिए हिंदी प्रतियोगिताएँ	22
मणिपुर के सफर से - सेवा काल की स्मृतियां	24
हिंदी पखवाडा समारोह - 2025	26
धुंध की ओर एक यात्रा - लेख	28
मून्नार की यात्रा - यात्रावृत	29
कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 50वीं बैठक	34
कोट्टयम नराकास के अधीन राजभाषा ट्रॉफियों का वितरण	35
रसोई घर	36
आइए हिंदी में बात करें	36
सेवानिवृत्तियां	37
हिंदी दिवस समारोह	39
अर्थशास्त्र नोबेल पुरस्कार	43

रबड़ बोर्ड की योजनाओं के लाभ उठाएँ

रबड़ बोर्ड ने नवरोपण तथा पुनर्रोपण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान करने हेतु आवेदन आमंत्रित किए हैं। यह लाभ 2025 में रबड़ की खेती करने वाले कृषकों को उपलब्ध होगा। रबड़ की खेती के लिए आवश्यक कुल खर्च का केवल एक भाग ही इस सहायता से पूरा होगा, फिर भी बागानों से आय न मिलने वाली इस अवधि में यह योजना कृषकों के लिए लाभकारी सिद्ध होगी। यहाँ यह भी स्मरण कराना है कि रबड़ के अपक्व काल में अंतराफसलन के माध्यम से कृषक अतिरिक्त आय अर्जित कर सकते हैं। अंतराफसलन करते समय भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान द्वारा निर्धारित मानकों का पालन करना आवश्यक है।

पारंपरिक रबड़ खेती वाले क्षेत्रों, जिनमें केरल भी शामिल है, में प्रति हेक्टेयर 40,000 रुपये की सहायता प्रदान की जाती है। आवेदन *सर्विसप्लस* वेब पोर्टल के माध्यम से ऑनलाइन जमा करने होंगे। इसका लिंक रबड़ बोर्ड की वेबसाइट (www.rubberboard.gov.in) पर उपलब्ध है। रबड़ कृषकों को आवेदन के साथ आवश्यक दस्तावेज़ वेब पोर्टल पर अपलोड करने होंगे। खेती के लिए वित्तीय सहायता के अलावा, जिन कृषकों ने वर्ष 2025 में अपने बागानों में रोगरोध हेतु छिडकाव और मनसून टापिंग के लिए वर्षारक्षण किए हैं उन्हें रबड़ उत्पादक संघों के माध्यम से वित्तीय सहायता भी प्रदान की जाएगी। इन लाभों के लिए, संबंधित रबड़ उत्पादक संघों को आवश्यक दस्तावेजों के साथ *सर्विसप्लस* वेब पोर्टल के माध्यम से आवेदन करना होगा। इन योजनाओं के लिए सहायता राशि 4,000 रुपए प्रति हेक्टेयर है। योजनाओं के बारे में विस्तृत जानकारी रबड़ बोर्ड की वेबसाइट पर उपलब्ध है। या, बोर्ड के प्रादेशिक कार्यालयों, क्षेत्रीय स्टेशनों और रबड़ बोर्ड कॉल सेंटर के माध्यम से जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

1947 में गठित, रबड़ बोर्ड ने वर्ष 2025 में अपनी लंबी यात्रा में कुछ महत्वपूर्ण पड़ाव पार कर लिए हैं। रबड़ की खेती को लोकप्रिय बनाने और किसानों के बीच वैज्ञानिक रबड़ खेती को लागू करने के उद्देश्य से शुरू की गई रबड़ मलयालम पत्रिका ने अपने प्रकाशन के 60 वर्ष पूरे कर लिए हैं। अगस्त 1965 में पहली बार प्रकाशित हुई इस पत्रिका को तब से रबड़ किसानों द्वारा खूब सराहा जा रहा है। पत्रिका में प्रकाशित अनुकरणीय किसानों की सफलता की कहानियाँ दूसरों के लिए प्रेरणास्रोत रही हैं। अगस्त 2025 में पत्रिका के हीरक जयंती समारोह के एक हिस्से के रूप में, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान में रबड़ कृषकों, अधिकारियों और इसके प्रकाशन से जुड़े लोगों के साथ एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस अवसर पर छात्रों और आम जनता की भागीदारी वाली कुछ प्रतियोगिताएँ भी आयोजित कर रहे हैं।

इसके अतिरिक्त, रबड़ बोर्ड के प्रशिक्षण केंद्र, राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान ने एक पूर्ण प्रशिक्षण केंद्र के रूप में अपनी स्थापना के 25 वर्ष पूरे कर लिए हैं। यह रबड़ से संबंधित विभिन्न क्षेत्रों में प्रशिक्षण प्रदान करने वाला एक अग्रणी संस्थान है। वर्ष 2000 में स्थापित, इस प्रशिक्षण केंद्र ने पिछले 25 वर्षों से रबड़ क्षेत्र में कौशल विकास और शोध निष्कर्षों के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। रबड़ बोर्ड, रबड़ क्षेत्र से जुडे लोगों को शामिल करके राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान की रजत जयंती मनाने की योजना बना रहा है।

शुभकामनाओं के साथ,

एम वसंतगेशन आई आर एस
कार्यकारी निदेशक, रबड़ बोर्ड

ई यू डी आर - इंडोनेशिया द्वारा की गई तैयारियां

डॉ. बिनोय के कुर्यन
प्रभारी सचिव एवं
उप निदेशक

यूरोपीय संघ वनोन्मूलन विनियमन (ईयूडीआर) 30 दिसंबर 2025 को पूर्ण रूप से लागू हो जाएगा। यूरोपीय संघ वनोन्मूलन विनियमन के अनुसार, यूरोप में रबड़ और रबड़ उत्पादों का आयात वन विनाश से मुक्त क्षेत्रों से होना चाहिए। यूरोपीय संघ ने अपनी वेबसाइट पर घोषणा की है कि वह सटीक भौगोलिक स्थिति डेटा के माध्यम से इसकी पुष्टि करने के लिए तंत्र स्थापित करेगा और इसके विपरीत कार्य करने वाले यूरोपीय आयातकों पर उनके कुल कारोबार का चार प्रतिशत जुर्माना लगाया जाएगा। भारत इन सभी शर्तों का पालन करते हुए यूरोपीय संघ को रबड़ और रबड़ उत्पादों का निर्यात करने के लिए तैयार है।

इंडोनेशिया, जो प्राकृतिक रबड़ उत्पादन में विश्व में दूसरे स्थान पर है, प्रतिवर्ष लगभग 2.65 मिलियन टन रबड़ का उत्पादन करता है। इंडोनेशिया में लगभग 83 प्रतिशत रबड़ बागान छोटे पैमाने के हैं।

इंडोनेशिया में रबड़ विपणन श्रृंखला

चूंकि इंडोनेशिया जैसे द्वीपसमूह में रबड़ बाजार श्रृंखला अत्यधिक खंडित है, इसलिए उत्पाद की आपूर्ति श्रृंखला के स्रोत का शुरू से अंत तक पता लगाना एक बड़ी चुनौती है।

बागानों से कृषकों, विनिर्माताओं या निर्यातकों तक पहुंचने से पहले रबड़ को कई चरणों से गुजरना पड़ता है। रबड़ छोटे कृषकों, स्थानीय व्यापारियों, थोक विक्रेताओं और विनिर्माताओं के नेटवर्क से होकर गुजरता है। कई कृषक अपने रबड़ अवैध बाजारों में बेचते हैं। वहां होने वाले लेन-देन का शायद ही कभी रिकॉर्ड रखा जाता है। इससे पता लगाने में भारी अंतर पैदा हो जाता है। ऐसे रबड़ की उत्पत्ति का पता लगाना कठिन हो सकता है। इसके कारण, ई यू डी आर के अनुपालन की पुष्टि करना असंभव हो जाता है।

पूर्णतः डिजिटल रबड़ पारिस्थितिकी तंत्र स्थापित करने के लिए कृषकों से लेकर व्यापारियों,

विनिर्माताओं और निर्यातकों तक सभी हितधारकों के बीच व्यापक समन्वय की आवश्यकता है। इंडोनेशिया और भारतीय रबड़ बोर्ड के साथ ट्रस्टो01 नामक संगठन इन प्रणालियों के कार्यान्वयन के लिए तकनीकी साझेदारी में शामिल है। ट्रस्टो01 की सहायता से, बागानों की भौगोलिक स्थान मानचित्रण, डिजिटल प्रलेखन और कानूनी सत्यापन प्रक्रियाएं कार्यान्वित की गई हैं, ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि वनों की कटाई से मुक्त और अनुकूल रबड़ निर्यातकों तक पहुंचे, तथा व्यापारियों और प्रसंस्करणकर्ताओं के लिए खेत से कारखाने तक रबड़ की आवाजाही को ट्रैक करने, सत्यापित करने और रिकॉर्ड करने के लिए तंत्र स्थापित किए गए हैं। इंडोनेशिया में रबड़ आपूर्ति श्रृंखला में ई यू डी आर मानदंडों के अनुसार विपणन श्रृंखला को मजबूत करने के लिए निम्नलिखित तंत्र स्थापित किए गए हैं।

1. **कृषक/छोटे धारक :** कृषकों और छोटे धारकों का भू मानचित्रण किया जाता है तथा जोखिम का आकलन किया जाता है, ताकि उन्हें ई यू डी आर विनियमों का अनुपालन करने में सहायता मिल सके।

2. **छोटे व्यापारी:** छोटे व्यापारियों को रबड़ बेचने वाले कृषकों का मानचित्रण करने तथा ई यू डी आर द्वारा निर्धारित विधियों में रबड़ व्यापार श्रृंखला का रिकॉर्ड करने के लिए प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है।

3. **प्रमुख व्यापारी :** कई गांवों से रबड़ एकत्रित करने वाले प्रमुख व्यापारियों को ई यू डी आर मानकों के अनुसार रबड़ के प्रत्येक बैच को रिकॉर्ड करने तथा ऐसे रबड़ के लिए पृथक भंडारण और माल की आवाजाही का ख्याल रखने की प्रक्रियाओं के बारे में प्रशिक्षित किया जाता है। यह ई यू डी आर नियंत्रणों की पुष्टि करने में एक महत्वपूर्ण कारक है।

4. **रबड़ प्रसंस्करण कारखाने, उत्पाद विनिर्माता, निर्यातक:** कारखानों/प्रसंस्करण संयंत्रों को ट्रेसेबिलिटी सिस्टम के साथ संरेखित किया गया है। यह सभी भूखंडों की जियोजेसन्स मैपिंग तरीके में संयोजित करके तथा उन्हें उनके ग्राहकों को

प्रस्तुत करने के लिए एक एकल फाइल में एनकोड करके, ई यू डी आर के अनुसार *उचित परिश्रम प्रमाणपत्र* जारी करने में सक्षम बनाता है।

पर्यावरणीय और सामाजिक मानदंडों को रिकॉर्ड करने की तकनीक

इंडोनेशिया में उद्योगों के सहयोग से तैयार की गई 'डिजिटल ट्रेसेबिलिटी' पहल, ट्रस्टो01, का शुभारंभ किया गया है। ईयूडीआर नियमों के अनुसार रबड़ विपणन श्रृंखला में उत्पादों की आवाजाही को रिकॉर्ड करने वाली इस प्रणाली के अधीन वैश्विक स्तर पर 5,20,540 एकड़ रबड़ बागानों में 45,256 कृषक सम्मिलित हैं। मार्च 2025 तक यूरोपीय संघ में ई यू डी आर नियमों का पालन करके 30,200 मेट्रिक टन रबड़ निर्यात करने में इस उद्यम से सुविधा की है। ऐसा माना जाता है कि भू-मानचित्रण, डिजिटल पंजीकरण और पारदर्शी ट्रैकिंग के संयोजन से, कृषकों को अपनी आय और बाजार पहुंच बढ़ाने में मदद मिली है, साथ ही वैश्विक स्थिरता मानकों को पूरा करने में भी मदद मिली है।

इस पहल का मुख्य उद्देश्य कृषकों और अन्य उद्योग हितधारकों के लिए व्यापक प्रशिक्षण और जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से जमीनी स्तर पर समर्थन प्रदान करता है। ईयूडीआर मानकों के प्रभावी कार्यान्वयन के लिए आवश्यक ज्ञान और उपकरणों के साथ व्यापार श्रृंखला में हितधारकों को सशक्त बनाकर, ईयूडीआर आवश्यकताओं के पूर्ण अनुपालन का समर्थन सुनिश्चित करता है। एक संरचित 'ट्रेसेबिलिटी सिस्टम' कृषकों को अपने बागानों को डिजिटल रूप से पंजीकृत करने और उन्हें 'जियो-मैप' करने में मदद करता है, ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे वनों की कटाई से मुक्त मानकों को पूरा करने हैं। बागानों से निर्यात टर्मिनल तक रबड़ की आवाजाही की वास्तविक समय पर निगरानी से खरीदारों को पारदर्शिता मिलती है और ई यू डी आर विनियमों के तहत व्यापार में सुविधा होती है। इस कुशल प्रलेखन प्रक्रिया ने व्यापार बाधाओं को कम कर दिया है और छोटे कृषकों के लिए एक स्थिर बाजार सुनिश्चित किया है।

इंडोनेशिया से प्राप्त आंकड़ों से पता चलता है कि इस प्रणाली में भाग लेने वाले कृषकों की आय में 5 से 15 प्रतिशत की वृद्धि हुई है, क्योंकि यूरोपीय संघ में रबड़ और रबड़ उत्पादों के आयातक सतत प्रणालियों को प्राथमिकता देते है और अपने उत्पादों के लिए बेहतर मूल्य देते है। आर्थिक लाभ के अलावा, इस पहल ने इंडोनेशिया में सतत भूमि उपयोग और वन संरक्षण को बढ़ावा दिया है। उपग्रह चित्रण और पॉलीगॉन वेरिफिकेशन का उपयोग करके बागानों के मानचित्रण से वन भूमि की अवैध कटाई में कमी आई है। छोटे कृषक बेहतर भूमि प्रबंधन पद्धतियां अपना रहे है। इससे उन्हें प्रमुख निर्यात बाज़ारों पर नियंत्रण और पहुंच में मदद मिलती है।

जैसे-जैसे वैश्विक विनियमन बढ़ रहे है और जिम्मेदारी से प्राप्त वस्तुओं की मांग बढ़ रही है, स्थिर आय और उचित मूल्य सुनिश्चित करने के लिए विनियमनों का अनुपालन आवश्यक होता जा रहा है। विनियमित और पारदर्शी आपूर्ति श्रृंखला में परिवर्तन न केवल कानूनी आवश्यकताओं को पूरा करता है, बल्कि इंडोनेशियाई रबड़ कृषकों की दीर्घकालिक समृद्धि भी सुनिश्चित करता है। आशा है कि आने वाले वर्षों में और अधिक किसान इस पहल में भाग लेने। इससे नेटवर्क का विस्तार होगा और वैश्विक टिकाऊ रबड़ आपूर्ति श्रृंखला में इंडोनेशिया की भूमिका मजबूत होगी।

स्थिरता पर यह ध्यान पर्यावरण को पुनस्थापित करने, सामाजिक स्थितियों को सुधारने और आर्थिक लाभ प्रदान करने में मदद करता है। टिकाऊ पद्धतियों को अपनाकर, इंडोनेशियाई रबड़ कृषक पर्यावरण की रक्षा करते हैं तथा बेहतर आजीविका और आर्थिक सशक्तिकरण के माध्यम से अपने समूहों में सुधार करते हैं। यह दृष्टिकोण उद्योग और कृषि के लिए बेहतर भविष्य सुनिश्चित करता है।

रबड़ पत्रिका (मलयालम) का हीरक जयंती समारोह

रबड़ मलयालम पत्रिका के हीरक जयंती समारोह का उद्घाटन रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक श्री एम. वसंतगेशन, आई.आर.एस. ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता रबड़ उत्पादन आयुक्त डॉ सिजु टी. ने की।

रबड़ पत्रिका का प्रथम प्रकाशन अगस्त 1965 में हुआ था। इसका उद्देश्य रबड़ खेती तथा रबड़ बागान उद्योग से संबंधित ज्ञान का प्रसार करना था। उस समय रबड़ खेती का विस्तार मुख्य रूप से केरल में था, इसलिए पत्रिका की शुरुआत प्रादेशिक भाषा मलयालम में की गई। उस अवधि में रबड़ बोर्ड के अध्यक्ष श्री पी.एस. हबीब मोहम्मद, आई.ए.एस. थे तथा पत्रिका के प्रथम संपादक श्री पी.के. नारायणन थे। शोध एवं विकास गतिविधियों के साथ-साथ इस पत्रिका ने रबड़ खेती के विस्तार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अपने उद्घाटन भाषण में कार्यकारी निदेशक श्री एम. वसंतगेशन, आई.आर.एस. ने कहा कि एक ही फसल के लिए प्रतिमाह पत्रिका प्रकाशित करना अत्यंत चुनौतीपूर्ण कार्य है, परंतु रबड़ बोर्ड द्वारा 60 वर्षों तक निरंतर प्रकाशन एक सराहनीय उपलब्धि है। उन्होंने यह भी बताया कि यह पत्रिका रबड़ कृषकों में अत्यधिक लोकप्रिय है। रबड़ बोर्ड अन्य रबड़ उत्पादक राज्यों के कृषकों के लिए स्थानीय भाषाओं में भी प्रकाशन करता है। उन्होंने कहा कि बोर्ड इस पत्रिका को कृषकों तक आवश्यक दिशानिर्देश पहुंचाने तथा उनकी राय प्राप्त करने का प्रभावी माध्यम मानता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ. सिजु टी. ने कहा कि रबड़ पत्रिका वैज्ञानिक कृषि पद्धतियों को प्रोत्साहित करने और खेतों में रबड़ खेती के विस्तार के लिए एक महत्वपूर्ण साधन है। उन्होंने बताया कि पत्रिका में प्रतिमाह प्रकाशित होने वाले कृषि-कार्य कृषकों के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होते हैं। आज विभिन्न सोशल मीडिया माध्यमों के बावजूद जानकारी की विश्वसनीयता सुनिश्चित

करना कठिन हो गया है, परंतु रबड़ पत्रिका कृषकों को प्रामाणिक और वैज्ञानिक जानकारी उपलब्ध कराती है।

'कृषि क्षेत्र के विकास में मीडिया की प्रासंगिकता' विषय पर बोलते हुए *कर्षकश्री* के प्रभारी संपादक श्री टी.के. सुनिलकुमार ने कहा कि कृषि पत्रिकाएँ किसानों को नवीन फसलों, नई तकनीकों और मूल्य संवर्धन की संभावनाओं के बारे में जागरूक करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। उन्होंने कहा कि यद्यपि सोशल मीडिया पर कृषि संबंधी जानकारी उपलब्ध है, परंतु उत्तरदायित्वपूर्ण ढंग से प्रकाशित कृषि पत्रिकाओं की जानकारी अधिक विश्वसनीय होती हैं।

अनेक कृषि पत्रिकाएँ, जो पहले सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्थाओं द्वारा प्रकाशित की जाती थीं, अब बंद हो चुकी हैं, ऐसे में रबड़ पत्रिका का 60 वर्षों से निरंतर प्रकाशन रबड़ किसानों के लिए नई जानकारी उपलब्ध कराने और समय-समय पर चेतावनी देने के संदर्भ में अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, कार्यक्रम में बोलते हुए रबड़ बोर्ड के प्रभारी सचिव डॉ. बिनॉय के कुर्यन ने कहा। रबड़ पत्रिका रबड़ क्षेत्र में बोर्ड द्वारा लागू की गई योजनाओं तथा रबड़ उत्पादक संघों एवं कृषकों द्वारा अपनाए गए नवाचारों का एकमात्र आधिकारिक अभिलेख है। उन्होंने कहा कि यह पत्रिका नई पीढ़ी के लिए सीखने, विचार करने और भविष्य की कार्ययोजना बनाने में सहायक है।

रबड़ बोर्ड के पूर्व उप निदेशक (प्रचार एवं जनसंपर्क), श्री एम.जी. सतीशचंद्रन नायर ने रबड़ पत्रिका के इतिहास पर प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि पत्रिका की स्थापना वैज्ञानिक रबड़ खेती का ज्ञान प्रदान करने, सफल कृषकों से अन्य कृषकों को परिचित कराने और रबड़ बोर्ड की वित्तीय सहायता योजनाओं की जानकारी देने के उद्देश्य से की नई थीं, और पत्रिका इन उद्देश्यों को सफलतापूर्वक पूरा कर रही है।

रबड़ पत्रिका के कार्टून पृष्ठ का संचालन करने वाले प्रसिद्ध कार्टूनिस्ट श्री प्रसन्नन आनिक्काड ने मंच पर पत्रिका के लोकप्रिय चरित्र 'तोट्टत्तिलाशान' और 'कुंजूट्टी' के चित्र दर्शकों के सामने मंच पर बनाए और प्रस्तुत किए।

'सतत कृषि पर मीडिया का प्रभाव' विषय पर आयोजित पैनल चर्चा में श्री मुरलीधरन तषक्करा, (पूर्व कार्यक्रम कार्यकारी, आकाशवाणी), श्री राजू मात्यु (विशेष संवाददाता, मलयाल मनोरमा), श्री अजीश प्रभाकरन (उप संपादक, मातृभूमि), श्री जेइम्स जैकब (सहायक संपादक, कर्षकश्री) तथा श्री विनोद नेडुमुडी (रबड़ न्यूज विशेषज्ञ) ने भाग लिया। पैनल चर्चा का संचालन निमि जॉर्ज (संपादक, karshakashrirangam.com) ने किया।

रबड़ पत्रिका की अब तक की सफल यात्रा में प्रमुख योगदान देने वाले सभी व्यक्तियों को समारोह में सम्मानित किया गया। रबड़ बोर्ड के संयुक्त रबड़ उत्पादन आयुक्त पद से सेवानिवृत्त हुए श्री पी.जी. सलीमकुमार तथा वरिष्ठ वैज्ञानिक पद से सेवानिवृत्त डॉ. विनोद तोमस को रबड़ पत्रिका में सर्वाधिक लेख प्रकाशित करने वाले लेखकों के रूप में सम्मान प्रदान किया गया।

पूर्व आकाशवाणी कार्यक्रम कार्यकारी श्री मुरलीधरन तषक्करा, जिन्होंने रबड़ पत्रिका के पिछले 169 अंकों में "मिटते गाँव के दृश्य, मिटती गाँव की अच्छाइयाँ" स्तंभ के माध्यम से कृषकों से सतत संवाद बनाए रखा; रबड़ पत्रिका में कई वर्षों से कार्टून पृष्ठ संभाल रहे कार्टूनिस्ट श्री प्रसन्नन आनिक्कड; तथा रबड़ बोर्ड के पूर्व उप रबड़ उत्पादन आयुक्त श्री कुमार पी. मूक्कुतला, जिन्होंने पत्रिका के "मिटते गाँव के दृश्य, मिटती गाँव की अच्छाइयाँ" के लिए चित्ररचना की थी, सभी को भी समारोह में सम्मानित किया गया।

रबड़ बोर्ड के प्रचार एवं जनसंपर्क विभाग के पूर्व उप निदेशक तथा रबड़ पत्रिका सहित बोर्ड की विभिन्न प्रकाशनों के प्रधान संपादक रहे श्री एम. जी. सतीश चन्द्रन नायर, श्री के जी सतीशकुमार, श्री प्रसाद आदि को भी समारोह में सम्मानित किया गया।

इसके अतिरिक्त, रबड़ बोर्ड में प्रचार एवं जनसंपर्कअनुभाग के सहायक निदेशक तथा रबड़ पत्रिका के प्रभारी संपादक के रूप में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाए श्री सेबास्टियन के डी तथा रबड़ बोर्ड के विकास अधिकारी के पद से सेवानिवृत्त एवं रबड़ पत्रिका के पूर्व सहायक संपादक श्री सिरियक सेबास्टियन को भी समारोह के दौरान सम्मानित किया गया।

पिछले दो वर्षों में रबड़ पत्रिका के सर्वाधिक नए अभिदाता जोड़ने वाले तिरुवनंतपुरम प्रादेशिक कार्यालय के प्रभारी विकास अधिकारी श्री निर्मल कुमार, रबड़ बोर्ड की पूर्व सहायक विकास अधिकारी श्रीमती अरुणा जॉर्ज तथा तिरुवनंतपुरम प्रादेशिक कार्यालय की क्षेत्रीय अधिकारी श्रीमती दीपा सुकुमार को पिछले वर्ष सर्वाधिक अभिदाता जोड़ने के लिए कार्यकारी निदेशक द्वारा सम्मानित किया गया।

समारोह में रबड़ पत्रिका के 60 वर्षों के इतिहास को दर्शाने वाली एक वीडियो प्रस्तुति भी प्रदर्शित की गई। इस प्रस्तुति में रबड़ बोर्ड के स्थापना से लेकर अब तक के अध्यक्षों एवं कार्यकारी निदेशकों के साथ-साथ रबड़ पत्रिका के विशिष्ट संपादकों-जैसे कि श्री पी.के. नारायणन, श्री के.ए. अरविंदाक्षन नायर, श्री पी.एन. नारायणन नायर तथा श्री के.वी. वर्की के विवरण भी सम्मिलित थी।

रबड़ बोर्ड के प्रचार एवं जनसंपर्क विभाग के प्रभारी उप निदेशक श्री बी. श्रीकुमार ने सभा का स्वागत किया तथा प्रचार अधिकारी श्री बेन्नी के. के. ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

समारोह में दो सौ से अधिक व्यक्तियों जैसे रबड़ कृषक, रबड़ उत्पादक संघों के प्रतिनिधि, मीडिया प्रतिनिधि, पूर्व एवं वर्तमान लेखकगण तथा रबड़ बोर्ड के अधिकारी उपस्थित रहे।

रबड़ बोर्ड के सहायक निदेशक (राजभाषा) श्री जी सुनील कुमार सेवानिवृत्त हो गए

रबड़ बोर्ड में 25 वर्षों की सराहनीय सेवा के बाद, श्री जी सुनील कुमार, सहायक निदेशक (रा भा) 30 अप्रैल 2025 को आधिकारिक जीवन से सेवानिवृत्त हुए। श्री जी सुनील कुमार 3 मार्च 2000 को वरिष्ठ हिंदी अनुवादक के रूप में रबड़ बोर्ड में शामिल हुए। वे 2003 से सहायक निदेशक का कार्यभार संभाल रहे थे। वर्ष 2006 से वे कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य सचिव के रूप में भी कार्यरत थे। वे बोर्ड द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका, "रबड़ समाचार" के संपादक थे। उनके मार्गदर्शन में "रबड़ समाचार" हिंदी पत्रिका की गुणवत्ता और प्रभावशीलता में निरंतर वृद्धि हुई, जिसे पाठकों ने हमेशा सराहा।

उन्होंने सूचना प्रसार, अनुवाद, राजभाषा प्रशिक्षण और भाषा-संबंधी नवाचारों को प्राथमिकता दी। सरल, सुबोध और कार्यात्मक हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देते हुए उन्होंने बोर्ड की विभिन्न गतिविधियों को व्यापक पहुँच दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रबड़ बोर्ड में राजभाषा के उनके सराहनीय कार्यान्वयन के तहत, रबड़ बोर्ड को गृह मंत्रालय से दो बार इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार एवं वाणिज्य और उद्योग मंत्रालय से सर्वोत्तम राजभाषा कार्यान्वयन पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

उन्होंने रबड़ बोर्ड वेलफेयर सोसाइटी के अध्यक्ष और सचिव के पद भी संभाले हैं। सरल स्वभाव, समर्पित कार्यशैली और हिन्दी के प्रति उनके अटूट लगाव ने राजभाषा विभाग के कार्यों को नए आयाम प्रदान किए। रबड़ बोर्ड में शामिल होने से पहले उन्होंने 11 वर्षों तक नारियल विकास बोर्ड में हिंदी अनुवादक के रूप में काम किया। हम उनके सुखद और समृद्ध सेवानिवृत्ति की कामना करते हैं।

कविता

कारगिल युद्ध की यादें

सीमा पर खड़े हम, देश की रक्षा के लिए
दुश्मनों के सामने, नहीं झुकने देंगे
हमारी जान की बाजी, देश के लिए लगाएंगे
भारत माता की सेवा, हमारा परम धर्म है

ट्रेंच में छिपकर, हम दुश्मन का सामना करते हैं
रात-दिन एक करके, देश की रक्षा करते हैं
हमारे दिल में देशभक्ति, हमारे खून में वीरता
हम भारत माता के सच्चे सपूत हैं

कारगिल की यादें, हमें कभी नहीं भूलेगी
हमारे दिल में देशभक्ति, हमेशा जगेगी
हम अपने देश के लिए, हमेशा लड़ेंगे
भारत माता की सेवा, हमारा परम धर्म है।

वेणुगोपालन सी वी
क.सहायक ग्रेड 1
प्रा का तृश्शूर

बोरिगोन की मिट्टी का धूमघर

उमाशंकर
उप निदेशक
(इंजीनियरी)

राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान द्वारा आयोजित अनुसूचित जाति उप योजना और जनजातीय उप योजना के एक हिस्से के रूप में प्रादेशिक कार्यालय, नगांव के अधीन विश्वनाथ चरियाली में स्थित बोरिगॉन गांव पहुंचा। गुआहाटी से लगभग 250 किमी दूर स्थित बोरिगॉन एक सुंदर गांव है। सुबह 7 बजे गुआहाटी से निकलकर प्रादेशिक कार्यालय नगांव पहुंचा। वहां से सहायक विकास अधिकारी और विश्वनाथ चरियाली क्षेत्रीय स्टेशन से क्षेत्रीय अधिकारी को लेकर बोरिगॉन गांव पहुंचे। वहां 8 दिवसीय टापेर्स प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया था। यह एक ऐसी यात्रा भी थी जो अनगिनत नए और सुंदर अनुभव प्रदान किए। तीन किलोमीटर लंबा तेजपुर पुल (कोलिया बमरो सेतु), जो तेज़ बहते ब्रह्मपुत्र नदी के ऊपर बना है, और राजमार्ग पर हाथी द्वारा कारों को रोककर पैसे वसूलने का दृश्य, ये सब मेरे लिए बिलकुल नए और अविस्मरणीय अनुभव थे। जैसे ही हम विश्वनाथ चरियाली पहुंचे, हमें राजमार्ग के दोनों ओर फैली चाय के बागानें दिखाई देने लगे। वहां से बोरीगोन गांव के रास्ते में सड़क के एक तरफ हरे धान के खेत और दूसरी तरफ गहरे हरे चाय के बागान का अद्‌भुत दृश्य देखने को मिला। ट्रैक्टरों के आवागमन से बनी कच्ची सडक पर यह यात्रा लगभग 20 किलोमीटर लंबी थी। यात्रा कई प्रकार की फसलों जैसे तुअर दाल, मिर्च, सरसों और झाड़ू घास आदि की खेत से होकर गुजरी। गांव की इस यात्रा के दौरान हमें केवल एक साप्ताहिक बाजार नजर आया। पहाड़ियों और घाटियों को पार करते हुए, हम दोपहर करीब 12:30 बजे जोहेश बसुमतारी के रबड़ बागान पहुंचे। यहीं पर आठ दिवसीय टापिंग प्रशिक्षण का आयोजन किया गया था। जोहेश ने लगभग चार हेक्टेयर में 1700 रबड़ के पौधे लगाए हैं, जिनमें से वह करीब 1300 पेड़ों से टापिंग करते हैं। इससे पहले कई गांवों में देखी गई हवा में सूखने वाली शीटों के विपरीत धुएं से सूखी शीटें देखकर आश्चर्य हुआ। हमने उनसे पूछा कि क्या यहां कोई धूमघर है, हमारा आश्चर्य दोगुना हो गया जब उन्होंने पास ही मिट्टी से बने एक डिब्बे की ओर इशारा करते हुए कहा कि यहां पर धूमघर है।

लगभग साढ़े चार फीट लंबा, साढ़े तीन फीट चौड़ा और चार फीट ऊंचा मिट्टी से बना एक बक्स यहां धूमघर के रूप में उपयोग किया जाता है। जोहेश के मुताबिक, इसमें एक बार करीब 150 शीट सूखा सकता है। धूमघर का

निर्माण स्थानीय रूप से प्राप्त सामग्रियों का उपयोग करके किया गया है, जिसमें उनके अपने विचार भी शामिल हैं। एक समतल आँगन में चार इंच ऊँचा प्लेटफॉर्म बनाया गया और उस पर धूमघर का निर्माण किया गया। दीवार चार कोनों पर बांस लगाकर बनाई जाती है। इसके लिए बांस को दो या तीन हिस्सों में चीरकर बाड़ बनाई जाती है, जिसे फिर ताड़ के पत्तों से ढककर मिट्टी मिलाकर लेप दिया जाता है। पहली परत की शीटें रखने के लिए एक प्लेटफॉर्म लकड़ी के तख्तों से उस ऊँचाई पर बनाया जाता है। धूम घर के ऊपर रखी टिन की चादर हटाने के बाद, पहली परत के लिए सरिए ऊपर से डाले जाते हैं। बांस की पतली कोंपलों का उपयोग यहां बरोटी के रूप में किया जाता है। व्यवस्था ऐसी है कि एक बरोटी में दो रबड़ शीट रखी जा सकती हैं। पहली परत भर जाने के बाद ऊपर की परत पर भी इसी प्रकार बरोटी बिछाकर चादरें बिछा दी जाती हैं। इसके ऊपर जूट की बोरी रखी जाती है और फिर धूआं हुंड को टिन की चादर से बंद कर दिया जाता है। लगभग एक फुट व्यास वाले चूल्हे के माध्यम से धुआं धूमघर में डाला जाता है, जो आधा अंदर और आधा बाहर व्यवस्थित होता है। जब मैंने बाहर जल रही आग के धुएँ को अंदर जाने देने के लिए भट्ठी की ढलान देखी और आग की लपटों को अंदर प्रवेश करने और खतरा पैदा करने से रोकने के लिए दिए गए इंतजामों को देखा, तो मैं जोहेश की इंजीनियरिंग कौशल की प्रशंसा किए बिना नहीं रह सका। इस प्रकार का धूमघर तैयार करने की लागत मात्र लगभग तीन हजार रुपए है।

जोहेश तीन दिन में एक बार टापिंग रीति अपनाते आया है। लाटेक्स के जमने के बाद उसे हैंड रोलर पर एक शीट बनाकर बांस और टिन शीट से बने शेड में सूखने के लिए रखा जाता है। तीन दिनों तक ऐसे सूखने के बाद चौथे दिन इसे धूमघर में स्थानांतरित कर दिया जाता है। चादर केवल एक दिन के लिए धूमघर में सुखाया जाता है। रबड़ बोर्ड शीट निर्माण के लिए सुझाई गई कई चीजें यहां छोड़ दी गई हैं। लेकिन जोहेश ने अपनी सीमित परिस्थितियों में सटीक तकनीकी प्रक्रिया के करीब रहने की पूरी कोशिश की है। जो शीट दिखने में बेहतर गुणवत्ता वाली हैं, उन्हें प्रयोगशाला परीक्षणों के माध्यम से सत्यापित करने की आवश्यकता है ताकि यह सुनिश्चित हो सके कि वे तकनीकी रूप से बेहतर हैं।

बिजली कनेक्शन, आधुनिक सुविधाओं और स्कूल स्तर से आगे की शिक्षा के बिना जोहेश के इन प्रयोगों को पहचाना और प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। तथ्य यह है कि जोहेश इस गांव में एक क्लस्टर बनाने, टापिंग प्रशिक्षण आदि आयोजित करने के लिए विश्वनाथ चरियाली के क्षेत्रीय अधिकारी श्री प्रकाश सिंह को पूरा समर्थन दे रहे हैं, जो रबड़ की खेती में जोहेश की रुचि और बेहतर कल के लिए उनके सपने को दर्शाता है।

राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान द्वारा रबड़ उत्पादन विभाग के अधीन प्रादेशिक कार्यालय नगांव के सहयोग से आयोजित आठ दिवसीय अनुसूचित जाति उप योजना और जनजातीय उप योजना प्रशिक्षण के पहले दिन का हिस्सा बनने की खुशी के साथ, गांववासियों द्वारा तैयार किए गए चावल और दाल खाने के बाद, जब हम गुआहाटी लौटे, तो जोहेश और बोरीगांव में स्थित मिट्टी का धूमघर हमारी यात्रा के अद्‌भुत अनुभवों में शामिल थे।

रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र (आरपीआईसी) - उद्देश्य एवं गतिविधियाँ

भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान में रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र (आरपीआईसी) की अवधारणा को कार्यान्वित हुए चार वर्ष हो चुके हैं।

डॉ षेरा मात्यु
प्रभारी अधिकारी,
भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान

लक्ष्य

इस केंद्र का मुख्य उद्देश्य रबड़ उत्पादों के विनिर्माण से संबंधित नवीन संकल्पनाओं को बढ़ावा देना और उनका कार्यान्वयन करना है। अर्थात रबड़ उत्पाद विनिर्माण से संबंधित नई संकल्पनाओं के साथ आने वालों को लगातार अपनी संकल्पनाओं पर चिंतन करके नई संभावनाएं तलाशने के लिए उनकी उपस्थिति में नये उत्पादों के सृजन करने की सुविधा यहां उपलब्ध हैं। यह सुविधा उद्यमियों में आत्मविश्वास पैदा करने में मदद करती है।

वर्ष 2020 में रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र में शुरू हुए अनुसंधान के परिमाणस्वरूप कई उद्यमियों के उत्पाद सामने आए हैं। प्लास्टिक / कृत्रिम उत्पाद प्रकृति के अनुकूल नहीं हैं। हालाँकि, वैज्ञानिक समूह बेहतर सुविधाओं के साथ पर्यावरण अनुकूल उत्पाद बनाने पर बहुत ध्यान दे रहा है। रबड़ बोर्ड के तरनीकी विशेषज्ञों ने पर्यावरण के अनुकूल रबड़ उत्पादों की आवश्यकता को समझते हुए अपने प्रयासों से प्राकृतिक रबड़ से विभिन्न मूल्यवर्धित उत्पाद विकसित किए, जो पर्यावरण के लिए हानिकारक नहीं हैं। निरंतर अध्ययन और समन्वित प्रयासों के परिणामस्वरूप, रबड़ बोर्ड ने उन उत्पादों पर विवरण तैयार किया है, जिन्हें प्लास्टिक/कृत्रिम रबड़ उत्पादों के विकल्प के रूप में प्राकृतिक रबड़ का उपयोग करके निर्मित किया जा सकता है। रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र इस संबंध में प्रमुख भूमिका निभा रहा है। रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र डिपिंग, स्प्रेइंग और फैब्रिक इंप्रग्नेशन जैसी प्रौद्योगिकियों को एकीकृत करते हुए नए उत्पाद विकसित करने में कार्यरत है।

उद्यमियों के लिए अन्य विकल्प

केंद्र सरकार रोजगार उपलब्ध कराने के लिए एएसएपी, स्किल इंडिया और स्टार्टअप मिशन जैसी विभिन्न योजनाएं कार्यान्वित कर रही है। रबड़ बोर्ड के अधीन कार्यरत रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र की सेवाएं ऐसे परियोजनाओं में लगे उद्यमियों को अधिक अवसर प्रदान करती हैं। रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र ने पहले ही उद्यमियों की जरूरतों के आधार पर कई उत्पाद विकसित और वितरित करने में सक्षम हुआ है।

रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र के साथ पंजीकरण करने की विधि

पिछले दो वर्षों में रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र द्वारा लगभग पंद्रह परियोजनाएं कार्यान्वित की गई हैं। जो स्वरोजगार, 'मेक इन इंडिया' परियोजनाओं में रुचि रखते हैं, तथा जो अपनी प्रौद्योगिकी को प्रोन्नत करने में रुचि रखते हैं, वे रबड़ उत्पाद

पर्यावरण अनुकूल मोज़े

सेफ रबड़ सॉल्यूशंस द्वारा विकसित बायोडिग्रेडेबल सैनिटरी मौजों के लोकार्पण तथा कंपनी के लोगो के अनावरण का समारोह अगस्त 2024 में रबड़ अनुसंधान संस्थान में आयोजित किया गया।

श्री एम वसंतगेशन आई आर एस, कार्यकारी निदेशक, रबड़ बोर्ड ने वितरण का उद्घाटन किया। श्री जॉर्ज के मात्यु. पूरव उप निदेशक, कृषि विभाग ने पहला उत्पाद स्वीकृत किया। सेफ रबड़ सॉल्यूशंस के प्रबंध निदेशक श्री मनोज सेबास्टियन द्वारा रबड़ बोर्ड की मदद से विकसित ये सैनिटरी मोजे पर्यावरण के अनुकूल और बायोडिग्रेडेबल हैं।

ये मोज़े जूतों के साथ पहने जाने पर पैरों को अतिरिक्त सुरक्षा और स्वच्छता प्रदान कर सकते हैं। मोज़ों का निचला हिस्सा सतह को पकड़ने के लिए डिज़ाइन किया गया है, जिससे फिसलने और गिरने का खतरा कम हो जाता है। इसके अतिरिक्त, यह सीवेज के साथ सीधे संपर्क को रोककर लेप्टोस्पायरोसिस और सेप्टिसीमिया जैसी बीमारियों से बचाने में मदद करता है। ऐसे मोज़े किसानों और बागान श्रमिकों के लिए जोंक, पिस्सू और सांपों से सुरक्षा प्रदान करने में उपयोगी होंगे। इसके अतिरिक्त, मधुमेह रोगियों को संक्रमण से बचाने से इस उत्पाद का मूल्य बढ़ जाता है। ये जॉगिंग जैसी व्यायाम गतिविधियों के लिए भी उपयोगी होंगे।

यह उत्पाद पुनः उपयोग एवं पुनर्चक्रण योग्य है। ये मोज़े पहनने में आसान हैं और फिसलन-रोधी हैं। उनका हल्का वजन और कम कीमत उनकी विशेषता को दोगुना कर देती है। इस उत्पाद को 2023 में निर्मित करने के लिए रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र के साथ पंजीकृत किया गया। यह उत्पाद चार महीने में पूरा हो गया। इस उत्पाद को पूर्णता तक लाने के लिए हमें परियोजना पंजीकरण से लेकर प्रौद्योगिकी हस्तांतरण तक लगभग 3.5 लाख रुपये खर्च करने पड़े। ये मोज़े विभिन्न आकारों और रंगों में बनाए जा सकते हैं। इसका उपयोग सेमी-गम बूट के रूप में भी किया जा सकता है। प्रबंध निदेशक मनोज सेबास्टियन जल्द ही इस नए उत्पाद का व्यावसायिक उत्पादन शुरू करने का इरादा रखते हैं।

इंक्युबेशन केंद्र की सेवाओं का उपयोग कर सकते हैं। प्रारंभिक चरण में 10,000 रुपये का पंजीकरण शुल्क देना होगा। इस परियोजना को उत्पादकों की राय और सुझावों को ध्यान में रखते हुए तैयार किया जा रहा है। इसके बाद उद्यमियों को रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र में उपलब्ध प्रौद्योगिकी का उपयोग करके उत्पाद बनाने का प्रशिक्षण दिया जाता है। इसके लिए वे उत्पाद प्रसंस्करण और प्रयोगशाला परीक्षण जैसी सुविधाओं का लाभ उठा सकते हैं। इस दौरान निःशुल्क वाई-फाई, प्रयोगशाला परीक्षण और पुस्तकालय जैसी सुविधाएं भी उपलब्ध रहेंगी। तकनीकी जानकारी प्रौद्योगिकी हस्तांतरण शुल्क का भुगतान करके प्राप्त की जा सकती है, जिसका निर्धारण छह महीने के भीतर तकनीकी पहलुओं की गणना करके किया जाता है।

रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र नई परियोजनाओं में रुचि रखने वाले व्यक्तियों को नवीन विचारों को समझाने और नई परियोजनाएं तैयार करने में मदद करता है। इसके लिए निम्नलिखित पते पर संपर्क किया जा सकता है।

डॉ षेरा मात्यु, प्रभारी अधिकारी, रबड़ उत्पाद इंक्युबेशन केंद्र, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान। ई मेल - sheramathew@rubberboard.org.in, फोन - 9447764153.

केरा परियोजना के कार्यान्वयन के लिए सहमति पत्र पर हस्ताक्षर

कृषि विकास एवं किसान कल्याण विभाग ने 'केरा' (केरल जलवायु लचीला कृषि-मूल्य श्रृंखला आधुनिकीकरण) परियोजना के लिए रबड़ बोर्ड के साथ सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं, जिसे विश्व बैंक की सहायता से 2025 से 2029 तक कार्यान्वित किया जाएगा। सहमति पत्र पर रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक एम. वसंतगेशन आईआरएस और केरा परियोजना के अतिरिक्त परियोजना निदेशक तथा वाणिज्य विभाग के निदेशक पी. विष्णुराज आईएएस ने हस्ताक्षर किए। इसी समारोह में केरा परियोजना के लिए स्पाइसेस बोर्ड के साथ भी सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए गए। सहमति पत्र पर स्पाइसेस बोर्ड की ओर से निदेशक डॉ. के बी रमाश्री ने हस्ताक्षर किए।

इस योजना के तहत रबड़ और इलायची की खेती करने वाले किसानों को 25 लाख रुपए की वित्तीय सहायता मिलेगी। रबड़ की खेती के लिए प्रति हेक्टेयर 75,000 रुपए और इलायची के लिए दो हेक्टेयर के लिए 100,000 रुपए की सहायता दी जाएगी। कोट्टयम, एरणाकुलम, पत्तनंतिट्टा, कण्णूर, मलप्पुरम और तिरुवनंतपुरम जैसे छह जिलों के रबड़ कृषक और इडुक्की जिले के इलायची कृषक इस योजना से लाभान्वित होंगे। इस अवसर पर रबड़ बोर्ड के रबड़ उत्पादन आयुक्त डॉ. सिजु टी., स्पाइसेस बोर्ड के निदेशक डॉ. के बी रमाश्री और स्पाइसेस बोर्ड के प्रभारी निदेशक (विकास) धर्मेंद्र दास ने संबोधित किया और शुभकामनाएं दीं। केरा के खरीद अधिकारी सुरेश सी. ने बैठक का स्वागत किया और संयुक्त रबड़ उत्पादन आयुक्त, रबड़ बोर्ड श्रीमती षैलजा के ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

कविता

श्रीबिंदु आर एस
कनिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी
भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान

पिता

यौवन सभी बीता अपनी परिवार के लिए
सभी सुख त्याग किया अपनी परिवार के लिए
जीवन के हरेक कण में वह यह चाहा
सबसे उन्नति में अपने परिवार को लगेगा।

आज मैं समझती हूँ कि
हे पिता, आप के समान
इस धरती में कोई भी नहीं
आप के समान मुझे समझना वाला भी
मेरे जीवन में कोई नहीं है।

मुझे मालूम, आज तुम इस धरा में नहीं है
ऊँचे अंबर मे आप शोभित है तारागणों के बीच
इस धरती पर खडाकर देखते भी
मुझे समझ में नहीं आता आप कहाँ पर है।
लेकिन अब मैं पहचानता हूँ वह सत्य
आप मेरे पास से कहीं भी नहीं गया
आप से पढाते हुए पाठों की दीप्ती में
मैं आज इस भूमि में जीवन बिताता है।

काल यवनिका में डूब गये तो आप
अब भी मेरे साथ है
आप से ज्वलित वह दीप
अब भी जलता है मेरी मन में।

रबड़ शब्दावली

1. **स्टाइरीन और ब्यूटाडीन रबड़** - स्टाइरीन और ब्यूटाडीन से बना एक कृत्रिम रबड़ है। इसमें घिसाव प्रतिरोध और उम्र बढ़ने के प्रति अच्छी स्थिरता होती है, और इसका टायरों व जूतों में व्यापक रूप से प्रयोग होता है।

   STYRENE-BUTADIENE RUBBER (SBR) : A synthetic rubber made from styrene and butadiene. It has good abrasion resistance and aging stability, used widely in tires and footwear.

2. **पॉली ब्यूटाडीन रबड़** - ब्यूटाडीन के बहुलकीकरण से बना एक कृत्रिम रबड़ है। इसमें उच्च लचीलापन और घिसाव प्रतिरोध होता है, और इसका उपयोग मुख्यतः टायरों के ट्रेड में किया जाता है।

   POLYBUTADIENE RUBBER - A synthetic rubber made from the polymerization of butadiene. It has high resilience and wear resistance, mainly used in tyre treads.

3. **पॉली आइसोप्रीन रबड़** - यह आइसोप्रीन से बना प्राकृतिक रबड़ का कृत्रिम रूप है। इसकी विशेषताएं प्राकृतिक रबड़ जैसी होती हैं और यह चिकित्सा एवं औद्योगिक उपयोगों में प्रयुक्त होता है।

   POLYISOPRENE RUBBER - A synthetic version of natural rubber, made from isoprene. It closely mimics the properties of natural rubber and is used in medical and industrial applications.

4. **एथिलीन प्रोपिलीन रबड़** -एथिलीन और प्रोपिलीन से बना एक कृत्रिम रबड़ है। यह मौसम, ओज़ोन और गर्मी के प्रति अत्यंत प्रतिरोधी होता है।

   ETHYLENE PROPYLENE RUBBER - A synthetic rubber made from ethylene and propylene. It is known for its excellent resistance to weather, ozone, and heat

5. **ब्यूटाइल रबड़** - आइसोब्यूटिलीन और थोड़ी मात्रा में आइसोप्रीन से बना कृत्रिम रबड़ है। इसमें वायु रोकने की उत्कृष्ट क्षमता होती है, और यह ट्यूबों व सीलेंट्स में प्रयोग होता है।

   BUTYL RUBBER - A synthetic rubber made from isobutylene and a small amount of isoprene. It has excellent air retention and is used in inner tubes and sealants.

6. **नाइट्राइल रबड़** - एक्रिलोनाइट्राइल और ब्यूटाडीन से बना यह रबड़ तेल, ईंधन और रसायनों के प्रति प्रतिरोधी होता है। यह ऑटो मोबाइल व औद्योगिक क्षेत्रों में उपयोगी है।

   NITRILE RUBBER - Made from acrylonitrile and butadiene, it resists oil, fuel, and other chemicals. It is commonly used in automotive and industrial applications.

7. **क्लोरोप्रीन रबड़** - यह एक कृत्रिम रबड़ है जो मौसम, ओज़ोन और अग्नि प्रतिरोध के लिए जाना जाता है। इसका उपयोग वेटसूट, पाइप और बेल्ट में होता है।

   CHLOROPRENE RUBBER- A synthetic rubber known for its weather, ozone, and flame resistance. Commonly used in wetsuits, hoses, and belts.

8. **सिलिकोन रबड़** - यह एक रबड़ जैसा पदार्थ है जो ऊष्मा, ठंड और रसायनों के प्रति अत्यंत प्रतिरोधी होता है। इसका उपयोग चिकित्सा

उपकरणों, रसोई के सामान और इलेक्ट ॉनिक्स में होता है।

SILICONE RUBBER - A rubber-like material with excellent heat, cold, and chemical resistance. It is used in medical devices, kitchenware, and electronics.

9. **पॉलिसल्फाइड रबड़** - यह रसायनों के प्रति प्रतिरोधी और लचीला कृत्रिम रबड़ है। इसे सीलेंट और ईंधन टैंक की परतों में प्रयोग किया जाता है।

POLYSULFIDE RUBBER - A synthetic rubber known for its chemical resistance and flexibility. It is used in sealants and fuel tank linings.

10. **पॉलियूरिथीन रबड़** - यह रबड़ अत्यधिक लचीला, मजबूत और घिसाव-प्रतिरोधी होता है। इसका उपयोग कोटिंग, पहियों और जूतों में होता है।

POLYURETHENE RUBBER - A rubber with high elasticity, strength, and resistance to abrasion. Used in coatings, wheels, and footwear.

11. **क्लोरोसल्फोनेटड रबड़** - यह यूवी, ओज़ोन और रसायनों के प्रति प्रतिरोधी विशेष रबड़ है। इसका उपयोग छत की परतों और औद्योगिक परतों में होता है।

CHLOROSULPHONATED POLYETHYLENE -A specialty rubber with resistance to UV, ozone, and chemicals. It is used in roofing membranes and industrial linings.

12. **अक्रिलेट रबड़** - यह गर्मी और तेल के प्रति अत्यधिक प्रतिरोधी कृत्रिम रबड़ है। इसका प्रयोग ऑटोमोबाइल ट्रांसमिशन और पाइप में होता है।

ACRYLATE RUBBER - A synthetic rubber with excellent heat and oil resistance. Used in automotive transmissions and hoses.

13. **फ्लूरो रबड़** - यह उच्च गुणवत्ता वाले रबड़ हैं जो ऊष्मा, तेल और रसायनों के प्रति अत्यधिक प्रतिरोधी होते हैं। इनका प्रयोग एयरोस्पेस और ऑटोमोबाइल सीलिंग सिस्टम में होता है।

FLURO RUBBERS - High-performance rubbers resistant to heat, oil, and chemicals. Used in aerospace and automotive sealing systems.

14. **एथिलीन** - विनाइल एसिटेट रबड़ - यह एक नरम और लचीला रबड़ जैसा पदार्थ है जिसमें स्पष्टता और तनाव दरार प्रतिरोध होता है। इसका उपयोग जूतों के सोल और पैकिंग में होता है।

ETHYLENE – Vinyl Acetate Rubber - A soft, flexible rubber-like material with good clarity and stress-crack resistance. Used in shoe soles and packaging.

15. **थर्मोप्लास्टिक रबड़** - ये रबड़ जैसे पदार्थ हैं जिन्हें गर्म करने पर आकार दिया जा सकता है और पुनः ढाला जा सकता है। इनमें रबड़ और प्लास्टिक दोनों के गुण होते हैं।

THERMOPLASTIC RUBBERS - These are rubber-like materials that can be molded and re-molded with heat. They combine the properties of rubber and plastic.

कुमारी मालविका वी एस *(सुपुत्री सिनी जे, कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1) की कलात्मक प्रस्तुति*

राजभाषा सम्मेलन

राजभाषा सम्मेलन 2025 का आयोजन रबड़ बोर्ड मुख्यालय में दिनांक 25.04.2025 को बड़े धूमधाम से किया गया। मलयालम की विख्यात साहित्यकार एवं केरल सरकार के एनसाइक्लोपीडिक पब्लिकेशन्स की निदेशक प्रो. (डॉ.) म्यूस मेरी जॉर्ज कार्यक्रम की मुख्य अतिथि थीं। डॉ सिजु टी, रबड़ उत्पादन आयुक्त, रबड़ बोर्ड ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की।

कार्यक्रम की शुरुआत प्रार्थना से हुई। डॉ. जेस्सी एम डी, प्रभारी निदेशक (अनुसंधान) ने स्वागत भाषण किया। उन्होंने स्वागत भाषण में सभी विशिष्ट अतिथियों, प्रतिभागियों तथा आमंत्रितों का हार्दिक अभिनंदन किया गया। अध्यक्षीय भाषण में डॉ सिजु ने राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन तथा कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को सुदृढ बनाने की आवश्यकता पर बल दिया। उद्घाटन भाषण मुख्य अतिथि प्रो. डॉ. म्यूस मेरी जॉर्ज ने किया। उन्होंने हिंदी के विकास, प्रशासनिक भाषा के रूप में इसकी महत्ता तथा ज्ञान-विस्तार में भाषाई विविधता की भूमिका पर अपने प्रेरणादायक विचार साझा किए। राजभाषा सम्मेलन, हिंदी पखवाड़ा 2024 के अंतर्गत आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के समापन समारोह के रूप में आयोजित किया गया। रबड़ बोर्ड मुख्यालय, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान तथा राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान के अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए पखवाड़े के दौरान कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थीं। इन प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार और प्रमाणपत्र राजभाषा सम्मेलन 2025 के अवसर पर प्रदान किए गए।

श्री जी. सुनील कुमार, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने कृतज्ञता ज्ञापित की। उन्होंने सभी अतिथियों, उपस्थित पदधारियों और प्रतिभागियों के प्रति आभार व्यक्त किया और राजभाषा हिंदी के संवर्धन की दिशा में सभी के निरंतर प्रयासों की सराहना की।

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

संघ सरकार की राजभाषा नीति के प्रभावी कार्यान्वयन एवं कार्यालयीन कार्यों में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने हेतु रबड़ बोर्ड के अधीनस्थ कार्यालयों में निरंतर हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया जा रहा है। इसी क्रम में दिनांक 29 मई 2025 को एक अर्धदिवसीय ऑनलाइन हिंदी कार्यशाला आयोजित की गई, जिसमें रबड़ बोर्ड के प्रादेशिक कार्यालय दिमापुर, इटानगर, तुरा सांतिरबाज़ार, सावंतवाड़ी एवं बारिपदा स्थित छह कार्यालयों के 30 से अधिक पदधारियों ने सहभागिता की।

ऑनलाइन कार्यशाला की भांति, बोर्ड के 22 अधीनस्थ कार्यालयों में भी एकदिवसीय भौतिक हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। ये कार्यशालाएँ क्रमशः प्रा.का. तलश्शेरी, श्रीकंठापुरम, तलिपरंबा, कांजंगाड, मूवाट्टुपुषा, तृश्शूर, तोडुपुषा, केंद्रीय परीक्षण स्टेशन चेत्तक्कल, पालक्काड, मण्णार्काड, कोषिक्कोड, निलंबूर, मंजेरी और पत्तनंतिट्टा, चंगनाश्शेरी, कांजिरप्पल्ली, अडूर, पुनलूर, कोट्टारक्करा, कासरगोड, पुत्तूर और मैंगलूर कार्यालयों में संपन्न हुईं। श्रीमती एम. श्रीविद्या, सहायक निदेशक (राजभाषा) द्वारा कार्याशालाओं का संचालन किया गया। कार्यशालाओं में प्रतिभागियों को राजभाषा अधिनियम, 1963 एवं राजभाषा नियम, 1976, राजभाषा नीति तथा कार्यालयीन कार्यों में हिंदी प्रयोग से संबंधित आवश्यक दिशा-निर्देशों की विस्तृत जानकारी दी गई। साथ ही, प्रतिभागियों को नोटिंग एवं ड्राफ्टिंग, अनुवाद संबंधी व्यवहारिक पहलुओं, ऑनलाइन अनुवाद उपकरणों के उपयोग तथा हिंदी के माध्यम से केंद्र सरकार की योजनाओं के प्रभावी कार्यान्वयन के बारे में भी अवगत कराया गया।

राजभाषा विभाग - स्वर्ण जयंती समारोह, नई दिल्ली

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की स्थापना के 50 वर्ष पूर्ण होने के उपलक्ष्य में स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन 26 जून 2025 को विज्ञान भवन, नई दिल्ली में अत्यंत गरिमा एवं भव्यता के साथ किया गया। इस अवसर पर केंद्रीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। उनके अतिरिक्त गृह राज्य मंत्री, राजभाषा विभाग की संयुक्त सचिव डॉ. मीनाक्षी जॉली, विभिन्न मंत्रालयों/विभागों के वरिष्ठ अधिकारीगण, सार्वजनिक उपक्रमों, बैंकों तथा विभिन्न नराकास के प्रतिनिधि, हिंदी पदधारी बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन एवं सरस्वती वंदना के साथ हुआ। मुख्य अतिथि श्री अमित शाह ने अपने उद्घाटन भाषण में राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में राजभाषा विभाग की ऐतिहासिक भूमिका को रेखांकित करते हुए कहा कि विभाग ने पिछले पाँच दशकों में प्रशासनिक भाषा के रूप में हिंदी को सशक्त बनाने की दिशा में उल्लेखनीय कार्य किया है। उन्होंने यह भी कहा कि तकनीकी युग में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाना हमारी प्राथमिकता होनी चाहिए तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता जैसे आधुनिक माध्यमों का अधिकतम उपयोग राजभाषा की उन्नति हेतु किया जाना चाहिए।

कार्यक्रम में राजभाषा क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान देने वाले कार्यालयों और अधिकारियों को सम्मानित भी किया गया। इसके अतिरिक्त, स्वर्ण जयंती वर्ष के अंतर्गत प्रस्तावित गतिविधियों की रूपरेखा भी प्रस्तुत की गई। रबड़ बोर्ड की ओर से श्री सजलकुमार धर, उप निदेशक (बा आ), उप कार्यालय, नई दिल्ली ने प्रतिनिधित्व किया, जिससे राजभाषा के क्षेत्र में अनुभवों और कार्यप्रणालियों का आदान-प्रदान संभव हो सका।

विद्यालयों के छात्रों के लिए हिंदी प्रतियोगिताएँ

रबड़ बोर्ड द्वारा कोट्टयम जिले के विद्यालयों के छात्रों में हिंदी भाषा के प्रति रुचि जगाने तथा उसके प्रयोग को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से 26 जून 2025 को अंतर-विद्यालय हिंदी निबंध लेखन एवं श्रुतलेख प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इस आयोजन में कोट्टयम जिले के विभिन्न विद्यालयों से 150 से अधिक छात्रों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। छात्रों की सक्रिय भागीदारी ने यह सिद्ध किया कि विद्यालय स्तर पर भी हिंदी के प्रति गहरी रुचि और अपनापन विकसित हो रहा है। विजेताओं की सूची नीचे दी जाती है।

निबंध लेखन प्रतियोगिता (कक्षा 8-12)

प्रथम : कुमारी षैना षेरीफ, 10वीं कक्षा, लूर्द्स पब्लिक स्कूल, कोट्टयम

द्वितीय : मास्टर लियाम अन्टोनियो साजन, 10वीं कक्षा, भवन्स न्यूज़प्रिंट विद्यालय, वेल्लूर

तृतीय : कुमारी नंदना जेयसण, 11वीं कक्षा, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, कोट्टयम

विशेष पुरस्कार : कुमारी अनिका कृष्णन (भवन्स न्यूज़प्रिंट विद्यालय, वेल्लूर), कुमारी नंदना बाबुराज (गिरिदीपम बथनी सेंट्रल स्कूल, कोट्टयम), कुमारी रिया सूसन एब्रहम (बीएमएम सीनियर सेकेंडरी स्कूल, कोट्टयम)।

श्रुतलेख प्रतियोगिता (कक्षा 5-7)

प्रथम : मास्टर अभिराम एम. आनंद, 7वीं कक्षा, भवन्स न्यूज़प्रिंट विद्यालय, वेल्लूर

द्वितीय : कुमारी मयूखा ए, 7वीं कक्षा, मरियन सीनियर सेकंडरी स्कूल, कोट्टयम

तृतीय : मास्टर अर्णव सजिन, छठी कक्षा, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, कोट्टयम

विशेष पुरस्कार : कुमारी ग्लोरिया विल्सन, भवन्स न्यूज़प्रिंट विद्यालय, वेल्लूर, कुमारी एकता पी एस, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, कोट्टयम

श्रुतलेख प्रतियोगिता (कक्षा 1-4)

प्रथम : मास्टर ए. धन्वंत, चौथी कक्षा, मरियन सीनियर सेकंडरी स्कूल, कोट्टयम

द्वितीय : मास्टर रिक्की आर, चौथी कक्षा, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, कोट्टयम

तृतीय : मास्टर पार्थिव दीपांकुरन, चौथी कक्षा, पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, कोट्टयम, मास्टर पार्थिव एस. राज, तीसरी कक्षा), दोनों पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, कोट्टयम

विशेष पुरस्कार : मास्टर नील केविन एवं कुमारी गीतांजली एस (दोनों पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, कोट्टयम)।

पुरस्कार वितरण समारोह

विजेताओं के लिए पुरस्कार वितरण समारोह 31 जुलाई 2025 को पूर्वाह्न 11.00 बजे रबड़ बोर्ड मुख्यालय, कोट्टयम में आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री वसंतगेशन, आई.आर. एस., कार्यकारी निदेशक ने की। कार्यक्रम में डॉ. बिनॉय के कुर्यन, प्रभारी सचिव, श्रीमती षैलजा के, संयुक्त रबड़ उत्पादन आयुक्त तथा बोर्ड के सभी विभागों के प्रमुख उपस्थित थे।

कार्यकारी निदेशक महोदय ने सभी विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए। उन्होंने विजेताओं की प्रशंसा करते हुए उन्हें भविष्य में भी इसी प्रकार की सह-पाठ्य गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने हेतु प्रोत्साहित और प्रेरित किया। उन्होंने प्रतिभागी छात्रों के शिक्षकों और अभिभावकों को भी उनके उत्कृष्ट मार्गदर्शन एवं सहयोग के लिए बधाई दी।

सभी प्रतिभागी छात्रों को सहभागिता प्रमाणपत्र भी प्रदान किए गए। कार्यक्रम में कोट्टयम जिले के विभिन्न विद्यालयों के शिक्षक एवं अभिभावक भी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे।

मणिपुर के सफर से - सेवा काल की स्मृतियां - (2021 से 2023 तक)
बाजारों की रानी

जयकुमार के वी
विकास अधिकारी
प्रादेशिक कार्यालय,
तलिपरंबा

मणिपुर आए मुझे तीन महीने हो गए हैं। यहां पहुंचने से पहले ही, सबसे पहली चीज जो मैं करना चाहता था, वह थी एशिया के सबसे बड़े महिला बाजार का दौरा करना, जो मणिपुर के लिए अद्वितीय है और विवाहित महिलाओं द्वारा चलाया जाता है। दुर्भाग्य से, कोविड - 19 महामारी यहां भी एक खलनायक बन गया और यात्रा में देरी हो गई। इस बाजार को 'इमा मार्केट' या 'नुपी कैटेल' के नाम से जाना जाता है। मणिपुरी में, 'इमा' का अर्थ है माँ। महिलाओं को 'नुपी' भी कहा जाता है। 'कैथेल' का अर्थ है बाजार। इसी से यह नाम पड़ा। 500 साल पुराना ऑल वूमेन मार्केट, एशिया (और दुनिया का भी) का सबसे बड़ा, जहां लगभग 5,000 महिलाएं व्यापार करती हैं, इम्फाल के बीचों-बीच देखने लायक एक खूबसूरत नजारा है।

कोरोना के कारण अप्रैल 2021 में बंद हुआ यह बाजार कोरोना के बाद फिर से खुला। कोविड-19 की दूसरी लहर में जान गंवाने वाली बाजार की पंद्रह महिला व्यापारियों को श्रद्धांजलि देने के बाद इसे खोला गया।

मैंने अगले दिन बिना कुछ खरीदे बाजार का दौरा किया। इमा कैथेल एक बाजार परिसर है जो इंफाल शहर के बीचों-बीच बीर टिकेंद्रजीत रोड पर 'थंगल' बाजार में सड़क के दोनों ओर तीन इमारतों में स्थित है। एक तरफ की इमारत में सब्जियां, फल, किराने का सामान आदि बेचा जाता है, और दूसरी तरफ की इमारत में सुंदर हथकरघा, घरेलू सामान आदि बेचे जाते हैं। इमारत का अंदरूनी हिस्सा बहुत अच्छी तरह से व्यवस्थित है, इसलिए आप आसानी से घूम सकते हैं और चीजें खरीद सकते हैं।

यह एक शोरगुल वाली जगह है। हालाँकि मैं खरीदारों और विक्रेताओं के बीच की बकबक, हँसी और गपशप को नहीं समझ पाता, लेकिन इसे सुनना और देखना एक विशेष आनंद है। महिलाएँ न केवल इमारतों के अंदर, बल्कि बाहर, आस-पास की सड़कों पर, ओवरब्रिड्ज के नीचे और हर उपलब्ध जगह पर सामान बेच रही हैं।

4 जनवरी, 2016 को इंफाल को हिला देने वाले भूकंप ने बाजार की इमारतों को काफी नुकसान पहुंचाया था। सौभाग्य से, व्यापारियों के सुबह 4.30 बजे पहुंचने से पहले ही भूकंप आ गया, जिससे कोई बड़ी जनहानि नहीं हुई। बाद में, इमारत का जीर्णोद्धार किया गया और पहले से कहीं अधिक खूबसूरती से व्यापार करना संभव हो गया।

मणिपुर की महिलाओं के लिए, यह केवल एक बाजार ही नहीं था। ऐसे समय में जब संचार की कोई सुविधा नहीं थी, दूर-दूर से ग्रामीण समाचार और अन्य जानकारी प्राप्त करने और एक-दूसरे के साथ सूचनाओं का आदान-प्रदान करने के लिए बाजार में आते थे। व्यापार के बीच के अंतराल के दौरान, बाजार महिलाओं के लिए जीवंत चर्चा करने और सामाजिक-राजनीतिक पदों पर बैठने का एक मंच बन गया। हालांकि कोई सटीक रिकॉर्ड नहीं है, लेकिन ऐसा माना जाता है कि महिलाओं के लिए बाजार केवल 16वीं शताब्दी में शुरू हुआ था।

'मीठी' (मणिपुर की तलहटी में रहने वाले लोग) के बीच मौजूद जबरन श्रम के हिस्से के रूप में, पुरुषों को दूर के खेतों में काम करने जाना पड़ता था। इसके अलावा, उन्हें युद्धों में भाग लेने के लिए नियुक्त किया जाना आम बात थी। इसलिए, महिलाएँ अपने घरों के पास अपने धान के खेतों में काम करती थीं, घरेलू काम संभालती थीं और कृषि उत्पादों को बेचने के लिए बाजार ले जाती थीं। इस प्रथा के कारण ऐसे बाज़ारों का निर्माण हुआ, जिनमें महिलाओं को प्राथमिकता दी गई।

मणिपुर में ब्रिटिश औपनिवेशिक प्रशासन द्वारा लागू किए गए आर्थिक और राजनीतिक सुधारों ने बाज़ार के कामकाज को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया। स्थानीय रूप से उत्पादित अनाज को उनकी ज़रूरतों पर विचार किए बिना मणिपुर के आस-पास के इलाकों में स्थित ब्रिटिश सेना के शिविरों में भेज दिया गया। मणिपुर की महिलाओं ने ऐसी गतिविधियों का कड़ा विरोध किया और 1939 में नुपी लान (महिला युद्ध) शुरू किया। इसके तहत बाज़ार में महिलाओं ने कड़ा विरोध प्रदर्शन किया। ऐसे विरोधों को कुचलने के लिए, अंग्रेजों ने उन इमारतों को विदेशियों को बेचने का फैसला किया, जिनमें बाज़ार चल रहे थे। लेकिन महिलाओं के कड़े विरोध के परिणामस्वरूप, अंग्रेजों को अपने फैसले से पीछे हटना पड़ा।

यह बिना किसी संदेह के साथ कहा जा सकता है कि यह बाज़ार, जो अद्वितीय सांस्कृतिक अनुभवों के लिए ऊर्जा का स्रोत है, आर्थिक सशक्तिकरण और लैंगिक समानता के एक महान उदाहरण के रूप में चिह्नित किया जाता रहेगा।

हिंदी पखवाडा समारोह - 2025

संघ की राजभाषा नीति अमल में लाने के लक्ष्य से रबड़ बोर्ड में राजभाषा हिंदी के कार्यान्वयन पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसी सिलसिले में हर वर्ष बोर्ड के मुख्यालय, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान एवं राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान में हिंदी पखवाडा समारोह का तथा बोर्ड के अधीनस्थ कार्यालयों में हिंदी दिवस का आयोजन किया जाता है। वर्ष 2025 के दौरान भी बोर्ड के कार्यालयों में हिंदी पखवाडा समारोह एवं हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया।

रबड़ बोर्ड में पखवाडे के दौरान मुख्यालय, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान और राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान के अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लिए कुल 12 प्रतियोगिताएं आयोजित की गयीं। प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक प्रतिभागियों को शामिल कराने के उद्देश्य से इस वर्ष स्टाफ कार चालकों और कैंटीन कर्मियों के लिए विशेष हिंदी वाचन प्रतियोगिता आयोजित की गई। इस वर्ष की प्रतियोगिताओं में मुख्यालय, भारतीय रबड़ अनुसंधान संस्थान और राष्ट्रीय रबड़ प्रशिक्षण संस्थान से करीब 300 पदधारी भाग लिये। प्रतियोगिताओं के निर्णायक के रूप में बोर्ड से बाहर के हिंदी से जुडे विशेषज्ञ व्यक्तियों को आमंत्रित किया।

राजभाषा विभाग का स्वर्ण जयंती समारोह : दक्षिण संवाद

राजभाषा विभाग के स्वर्ण जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में दक्षिण संवाद नामक भव्य समारोह का आयोजन 11 जुलाई, 2025 को जीएमसी बालयोगी इंडोर स्टेडियम, गाचीबोवली, हैदराबाद में आयोजित किया गया। इस आयोजन का उद्देश्य राजभाषा हिंदी के 50 वर्षों की उपलब्धियों का उत्सव मनाना, दक्षिण भारत में राजभाषा कार्यान्वयन को और अधिक सुदृढ़ करना तथा भारतीय भाषाओं के बीच संवाद व सहयोग को बढ़ावा देना था।

कार्यक्रम में केंद्रीय कोयला एवं खान मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी, आंध्र प्रदेश के उपमुख्यमंत्री श्री पवन कल्याण तथा राज्यसभा के उपसभापति श्री हरिवंश नारायण सिंह सहित अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने भाग लिया। अपने संबोधनों में अतिथियों ने हिंदी को भारतीय भाषाओं के प्रतिस्थापन के रूप में नहीं, बल्कि विविध भाषाओं को जोड़ने वाले सेतु के रूप में स्वीकार करने की आवश्यकता पर बल दिया।

पांचवां अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन

हिंदी दिवस के अवसर पर 14-15 सितंबर 2025 को गांधीनगर, गुजरात स्थित महात्मा मंदिर में पांचवें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन का भव्य आयोजन किया गया। यह सम्मेलन देशभर में राजभाषा हिंदी के प्रोत्साहन और विभिन्न भारतीय भाषाओं के बीच सहयोग एवं समन्वय को बल प्रदान करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम सिद्ध हुआ।

इस दो दिवसीय राष्ट्रीय आयोजन का उद्घाटन भारत के केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमित शाह द्वारा किया गया। उनके साथ विभिन्न केंद्रीय मंत्रालयों एवं विभागों के वरिष्ठ अधिकारी, भाषा विशेषज्ञ, प्राध्यापक तथा राजभाषा कार्यान्वयन से जुडे हुए अनेक गणमान्य व्यक्तियों ने सम्मेलन की गरिमा बढ़ाई। केंद्र सरकार के 7,000 से अधिक अधिकारियों की उपस्थिति ने इसे अब तक के सबसे बड़े राजभाषा सम्मेलनों में शामिल कर दिया। सम्मेलन का मुख्य विषय विविधता में एकता पर केंद्रित रहा। सम्मेलनों में यह भी रेखांकित किया गया कि क्षेत्रीय भाषाओं का सम्मान करते हुए राजभाषा हिंदी को आगे बढ़ाना ही भारत की भाषाई समरसता का आधार है।

कार्यक्रम के दौरान विभिन्न तकनीकी सत्रों, कार्यशालाओं और परिचर्चाओं के माध्यम से राजभाषा कार्यान्वयन की चुनौतियों, नई प्रवृत्तियों तथा प्रशासनिक प्रक्रियाओं में भाषा-प्रयोग के उन्नत तरीकों पर विस्तृत विचार-विमर्श किया गया। डिजिटल युग में राजभाषा के प्रभावी उपयोग और कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित भाषाई उपकरणों के समावेश पर भी विशेष ध्यान दिया गया। रबड़ बोर्ड की ओर से श्रीमती एम. श्रीविद्या, सहायक निदेशक (राजभाषा) ने दोनों कार्यक्रमों में प्रतिनिधित्व किया।

धुंध की ओर एक यात्रा - एक नौकरी, एक प्रदेश, एक शुरुआत

टिंटुमोल एम
सहायक विकास अधिकारी
प्रादेशिक कार्यालय, पुनलूर

जब युवा अवस्था में पहली नौकरी मिली, तो उस उत्साह को शब्दों में बाँधना आसान नहीं था। अगर वह नौकरी देश के एक ऐसे कोने में हो जहाँ कभी गए ही न हों - पूर्वोत्तर भारत का मेघालय - तब तो वह अनुभव और भी अनोखा बन जाता है।

केवल पुस्तकों में पढ़ा हुआ वह प्रदेश, और उस ओर की यात्रा- वह भी पिता के साथ। रबड़ बोर्ड में नियुक्ति की खबर आई और फिर शुरू हुई जीवन की सबसे यादगार यात्राओं में से एक। तीन दिन, तीन रातें - ट्रेन की खिड़की से बदलती तस्वीरें। तमिलनाडु से आगे किसी नए राज्य में कदम रखने का यह जीवन में दूसरा अवसर था। ट्रेन की खिड़की से दिखते बदलते दृश्य जैसे मन में भी नई सोचें भर रही थी। पहली बार घर-गाँव से इतनी दूर निकलना,एक दिन गुवाहाटी में रुकने के बाद, तुरा की ओर यात्रा शुरू हुई। चारों ओर खेत, साल के जंगल, पहाड़ी रास्ते, प्रकृति मानो अपने पूरे सौंदर्य के साथ स्वागत कर रही थी।

तुरा - नए जीवन की पहली दस्तक

जैसे ही मेघालय की सीमा पार की, भौगोलिक परिवर्तन साफ दिखने लगा। घुमावदार, ऊँचाई पर चढ़ते रास्ते; कभी लगता जैसे आकाश बहुत करीब है, तो कभी लगता ज़मीन यहीं खत्म हो रही है। काफ़ी थकान यात्रा के बाद, प्रादेशिक कार्यालय पहूँचा। वहाँ सहायक सचिव, सरस्वती अम्मा ने दफ्तर का एक संक्षिप्त परिचय दिया। इसी बीच मन में एक सवाल बार-बार उठता रहा - रुकूं या लौट जाऊँ? लेकिन पहली नौकरी को छोड़ देने का विचार मन को कहीं से भी स्वीकार नहीं हुआ।

एक वाक्य जिसने रास्ता दिखायाः पहली नौकरी को कभी न छोड़ो

जब आप नई जगह पर होते हैं, डर स्वाभाविक होता है। लेकिन मन में एक ही बात गूंज रही थीः यही तो शुरुआत है। हर चीज़ सीखी जा सकती है, हर परिस्थिति अपनाई जा सकती है - ज़रूरत बस हिम्मत की है।

27 मई - जब एक नया जीवन शुरू हुआ

27 मई का दिन बीतते-बीतते मुझे महसूस हुआ कि मैं बदल चुकी हूँ। मैंने केवल एक प्रदेश की दूरी पार नहीं की थी बल्कि मैंने अपने भीतर की सीमाएँ भी पार कर ली थीं। यह नौकरी सिर्फ आजीविका नहीं थी, बल्कि आत्म-विकास की दिशा में पहला कदम था ।

जब ज़िंदगी बुलाए, तो उसका जवाब देना चाहिए। नए रास्ते वहाँ से खुलते हैं और कहीं-न-कहीं हम अपने असली रूप को पा लेते हैं।

मून्नार की यात्रा - कांतल्लूर, वट्टवडा और कोलुक्कुमला

नसीफ ए यू
कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1
सतर्कता प्रभाग

लंबे समय से मैं अपने परिवार के साथ केरल के प्राकृतिक और पहाड़ी नज़ारे को देखने के लिए इडुक्की जिले में जाने की योजना बना रहा था। चूंकि बच्चों की छुट्टियां 2025 में होने वाली थीं, इसलिए हमने इडुक्की और खासकर मून्नार - 'दक्षिण भारत का कश्मीर' जाने की योजना बनाई, ताकि हम मई के महीने में केरल के सबसे ठंडे मौसम का अनुभव कर सकें, जो केरल का सबसे गर्म महीना होता है। मेरे बच्चे और पत्नी केरल के रोमांचक और सबसे प्रतीक्षित स्थान को देखने के लिए बहुत उत्साहित थे। मैंने पहले ही इन क्षेत्रों में बाइक की सवारी की है।

आखिरकार, हमने 10 मई 2025 को सुबह 5 बजे यात्रा शुरू करने की योजना बनाई। यात्रा के लिए मेरे दोस्त से एक किराए की कार का प्रबंध किया गया। जब कार घर के सामने आई, तो बच्चे बहुत उत्साहित थे और खुशी से शोर मचा रहे थे और वे कार में बैठकर रात में ही मून्नार जाने के लिए रोमांचित थे। हालाँकि, मैंने उन्हें मना किया कि हमें यात्रा से पहले अच्छी नींद लेनी होगी ताकि सभी जगहें देख सकें, जानवरों को देख सकें आदि। सभी लोग सुबह जल्दी उठ गए और 5 बजे से पहले यात्रा के लिए तैयार हो गए। नाश्ता, गर्म पानी और अन्य व्यक्तिगत चीजें हमारे साथ यात्रा करने के लिए तैयार थीं। उम्मीदों की यात्रा सही समय पर शुरू हुई।

हमने पोल्लाची, उदुमलपेट, चिन्नार, मरयूर होते हुए मून्नार पहुँचने की योजना बनाई। यात्रा के दौरान मेरी छोटी बच्ची बार-बार उल्टी कर रही थी। हालाँकि, जब हम अपने निर्धारित कार्यक्रम के अनुसार मरयूर पहुँचे और होटल में पहुँचे, तो मेरी बेटी पहाड़ पर चढ़ने के लिए बिलकुल ठीक थी। दोपहर का भोजन करने के बाद, हमने कांतल्लूर की यात्रा शुरू की। रास्ते में, हम प्रसिद्ध कांतल्लूर गुड़ उत्पादन को देखने के लिए उत्सुक थे और वहाँ एक उत्पादन केंद्र पर रुके, जहाँ हमने गुड़ उत्पादन की पूरी प्रक्रिया देखी और गुड़ खरीदा। फिर हमने कांतल्लूर पहुँचने से पहले "हनी रॉक" देखा, जहाँ एक ही चट्टान पर बहुत सारे बड़े-बड़े मधुमक्खी के

छत्ते थे। उसके बाद, कांतल्लूर पहुँचे, एक शांत कृषि गाँव जहाँ की जलवायु और संस्कृति ने हमारे दिलों को खुशियों से भर दिया। एक बूढ़ा आदमी हमारी कार के पास आया और पूछा 'क्या आप इस गाँव में और अधिक घूमने में रुचि रखते हैं?' मैंने कहा 'हाँ, बिल्कुल' और वह हमारी गाड़ी में बैठ गया और वह हमसे हमारे मूल स्थान के बारे में पूछा और यह भी पूछा कि हमने इस जगह को घूमने के लिए क्यों चुना? वह लगभग 80 वर्ष के एक वृद्ध, बुद्धिमान, उत्साही व्यक्ति थे। वह स्वयं को एक महान यात्रा मार्गदर्शक बताते थे और उन्होंने वाहन को पास के पेरूमाला गांव में ले जाने को कहा। वहाँ वह हमें एक गाँव के खेत में ले गया और कई खेत मालिकों के एक बड़े खेत को दिखाया। वहाँ उसने हमें संतरा, सेब, मुसम्बी, बड़े बेर, स्ट्रॉबेरी, पैशन फ्रूट, करौंदा, ब्लैकबेरी, एवोकाडो, बीन्स, गाजर, आलू, लहसुन, गोभी जैसी सब्जियाँ और कई तरह के फूल दिखाए और हमें अपनी पसंद के हिसाब से चुनने और खाने और ले जाने की अनुमति दी। हमने एवोकाडो, पैशन फ्रूट, स्ट्रॉबेरी, गोभी, बीन्स, गाजर, लहसुन आदि खरीदे। उसने हमें बताया कि उसे बताए बिना दोबारा कांतल्लूर न आएँ। उसने मुझसे कहा कि अगर हम अगस्त के महीने में वहाँ जाएँ तो यह बहुत बढ़िया होगा और वह हमारे लिए सब कुछ व्यवस्थित कर देगा। एक भावनात्मक गाँव की मासूमियत। हमने उसका शुक्रिया अदा किया और होटल में रात बिताने के लिए मरयूर लौट आए।

मरयूर में एक सुखद और अच्छा समय बिताने के बाद, हम 11 मई की सुबह 5 बजे वट्टावडा की ओर चल पड़े। वट्टावडा की यात्रा कुछ व्यस्त थी क्योंकि दिन की योजना शाम को 7 बजे तक सूर्यनेल्ली पहुँचने की थी। हमने माट्टुपेट्टी डैम, इको पॉइंट, कुंडला डैम और टॉप स्टेशन से होते हुए वट्टावडा की ओर प्रस्थान किया। हम केवल इको पॉइंट पर उतरे ताकि उस ध्वनि की प्रतिध्वनि का अनुभव कर सकें जो हमें झील के एक तरफ से शूट की गई थी और प्रतिध्वनि झील के दूसरी तरफ हरे पेड़ों से भरी एक छोटी सी पहाड से आ रही थी। झील के दूसरी तरफ से आ रही तेज आवाज को सोचकर हम चकित थे। वहां घूम रहे एक पेशेवर फोटोग्राफर से कुछ अच्छी तस्वीरें लेने के बाद, हम वट्टावडा की ओर चल पड़े। वट्टावडा पहुंचने से पहले, वहाँ एक चेक पोस्ट थी, जहाँ से एक टूरिस्ट गाइड हमारी कार की ओर आया और पूछा 'क्या आप 2.5 घंटे की यात्रा में लगभग 30 किलोमीटर की दूरी तक उनकी जीप सफारी द्वारा वट्टावडा के दर्शनीय स्थलों की सैर करना चाहते हैं?' चूँकि हमारे पास वट्टावडा में बहुत कम समय था, इसलिए हमने उनकी बात मान ली और हमने कार वहीं पार्क की और आगे की यात्रा के लिए उनकी जीप में चढ़ गए। जीप चालक, जिसका नाम मुनि था, मुनिजी हमको स्वागत किया और वट्टावडा शहर से दोपहर के भोजन के बाद यात्रा शुरू की।

जब जीप ने अपने पहिये घुमाना शुरू किया, तो मैंने ड्राइवर से बात करना शुरू कर दिया। वह एक अद्भुत व्यक्ति था और उसने वट्टावडा के बारे में लगभग सब कुछ बताया। वहां की संस्कृति, अर्थव्यवस्था, परिस्थितियाँ, खेती, बाहरी लोगों का धावा, उसके परिवार के बारे में जानकारी आदि और हमारे बारे में भी पूछा। बीच में उसने जीप रोकी और एक स्ट्रॉबेरी के खेत में घुस गया और हमें उस खूबसूरत खेत को देखने के लिए आमंत्रित किया, जहाँ बहुत सारी स्ट्रॉबेरी थीं। यह पहली बार था जब मैंने इतनी बड़ी स्ट्रॉबेरी

देखी, जो छोटे आम के आकार की थीं और स्वादिष्ट थीं। फिर वह हमें लगभग 5 किलोमीटर की ऑफ रोड यात्रा के बाद एक पहाड़ के ऊपर ले गया, जहाँ से पूरा वट्टावडा दिखाई देता था, जिसमें मुत्तुवन कुड़ी भी शामिल था, जहाँ वट्टवडा के आदिवासी रहते हैं। उसने हमें बताया कि मुत्तुवन आदिवासी अलग संस्कृति के हैं और वट्टवडा के मूल निवासियों के साथ घुलमिल नहीं पाते हैं। सबसे आश्चर्यजनक बात यह थी कि उसने हमें अपनी शादी के बारे में बताया। दूल्हा दुल्हन को खोजने के लिए जंगल में खोज करना पडता है, जो अपने रिश्तेदारों के साथ घने जंगल में होगी। अगर दुल्हन को दूल्हा मिल जाए तो वह उसके साथ जंगल में चल सकता है और शादी जल्दी हो जाएगी। वे जन्मजात शिकारी हैं और उनकी अपनी भाषा भी है। वे उस भाषा में बात करते, जिसके बारे में उन्हें पता नहीं था और वे जंगल के फल, सब्जियाँ और जानवर खाते हैं। उन्होंने बताया कि अगर हम एक बार फिर वट्टवडा घूमने की योजना बनाते हैं, तो वे हमें उस आदिवासी क्षेत्र में ले जाएंगे जहाँ उनके एक मित्र उनकी भाषा और वहाँ की कुछ अन्य प्रसिद्ध जगहों से परिचित हैं। उन्होंने बताया कि कन्याकुमारी बहुत नज़दीक है और वहां से पहाड़ की एक ऊँचाई पार करके वहां पहूँच जा सकता है। उन्होंने वहां के लोगों की मार्केटिंग रणनीति के बारे में बताया। वहां का लहसुन कुछ खास है जो बिना खराब हुए एक साल भर टिकता है। वे वट्टवडा के बाहर से लहसुन खरीदते और वट्टवडा में बेचते हैं और कहते हैं कि यह माल वट्टवडा के खेतों से है और उन्हें अच्छी कीमत मिलती है। छोटे लहसुन बड़े लहसुन की तुलना में बेहतर हैं क्योंकि एक छोटा लहसुन दो बड़े लहसुन के बराबर काम करेगा। उन्होंने यह भी बताया कि हर साल अगस्त के महीने में वट्टवडा फलों और सब्जियों से भरा होता है और उन्होंने हमें अगस्त के महीने में वट्टवडा जाने के लिए आमंत्रित किया। उन्होंने आश्वासन दिया कि ठहरने के विकल्पों से लेकर खेतों की सैर, सस्ते फल और सब्जियां खरीदना, जानवरों को देखने के लिए रात में जीप सफारी, आदिवासी गांव की सैर आदि सब कुछ उपलब्ध है। आखिरकार, हम शुरुआती बिंदु पर पहुंचे और हमने एक-दूसरे को भाईचारे की तरह गले लगाया। उन्होंने मुझसे कहा कि वे मेरे परिवार के फिर से वहां जाने का इंतजार करेंगे।

वट्टवडा से एक शुभ दिन की यात्रा के बाद, हम मून्नार की ओर बढ़े और फिर से हमें एक बहुत बड़ा ट्रैफ़िक जाम मिला। हालाँकि, यह उतना नहीं था जितना हमने विपरीत दिशा में ड्राइविंग करते समय अनुभव किया था। एक गहरी साँस, भगवान ने हमें बचा लिया, यह वहाँ केवल एक घंटे का ट्रैफ़िक है। हम आगे बढ़े और फिर से सड़क पर कछुए की चाल थी और मैंने गूगल मैप के माध्यम से खोज की और सूर्यनेल्ली जाने वाली एक बाईपास सड़क पाई और हम उस सड़क से मुड़ गए। उसके बाद हमें 'रॉन्ग टर्न' नामक एक अंग्रेजी चित्र जैसा अनुभव हुआ। 3-4 किलोमीटर के बाद, हम सड़क पर पथ-खोल के साथ एक चाय बागान में प्रवेश कर गए और आगे की यात्रा वहाँ एक रोमांचकारी यात्रा थी, कभी-कभी सड़क पर बड़ी-बड़ी चट्टानें थीं। समय लगभग 7.30 बजे था और कोई स्ट्रीट लाइट नहीं थी और उस मार्ग में 'S' मोड़ भी थे। हम इस स्थिति से काफी डरे हुए थे कि कुछ स्थानों पर हमें सड़क भी नहीं मिल पा रही थी। खैर, राजमार्ग के करीब पहुंचने पर 4-5 किलोमीटर के बाद स्थिति नियंत्रण में

आ गई। जब टायर हाईवे पर आये तो वह इतना अच्छा अनुभव था कि हम नरक से स्वर्ग में पहुंच गये। कार में बैठे सभी लोग रोशनी से भरी ऐसी समतल सड़क पाकर बहुत खुश थे। यह प्रसिद्ध मून्नार गैप रोड था, जहाँ हर पर्यटक इडुक्की की उस शांत, सुंदर और प्राकृतिक सुंदरता से होकर यात्रा करने के लिए उत्सुक था। कुछ दूर जाने के बाद, एक बाएँ मोड़ आया जहाँ कोई तारकोल की सड़क नहीं थी, केवल छोटी ईंटें थीं, लेकिन सड़क समतल थी। आगे बढ़ने पर, 4 किलोमीटर के बाद, एक अच्छी सड़क मिली जो जंगल में खुलती थी, जहाँ रात में चक्काकोम्बन जैसे हाथी खेल रहे थे। हमें हाथियों को देखने का कोई सौभाग्य/दुर्भाग्य नहीं था और 5-6 किलोमीटर के बाद, हम होटल पहुंच गए, जो पहले से ही ऑनलाइन मोड के माध्यम से बुक किया गया था। होटल एक परिवार द्वारा चलाया जाता था और वहाँ एक घरेलू माहौल था। जो कुछ भी हम चाहते थे, उसका तुरंत प्रबंध किया गया और अच्छी मुस्कान के साथ दिया गया। उन्होंने हमें एक धमकी भरा सच बताया कि पिछले दिन चक्काकोम्बन शाम के समय उस स्थान पर आए थे।

मैंने 12 मई को सुबह 5.45 बजे सूर्योदय देखने के लिए कोलुक्कुमला शिखर ट्रैकिंग पैकेज के लिए सूर्यनेल्ली के एक एजेंट के पास 3,000/- रुपए की राशि पर 5 घंटे की यात्रा के लिए एक जीप बुक की थी। वह व्यक्ति ने मुझे 11 मई को शाम 5 बजे के आसपास फोन किया और बताया कि एक जोड़ा आपके साथ शामिल होना चाहता है। मैंने पूछा, 'अगर मैं उन्हें हमारे साथ साझा करने की अनुमति देता हूं तो मुझे क्या लाभ होगा?' उसने मुझे बाताया कि 500/- रुपए की राशि की छूट दी जाएगी। मैंने छूट के बारे में कल्पना की और साथ ही अधिक लोगों के हमारे साथ शामिल होने ('एक पत्थर से दो पक्षी') यात्रा को और अधिक आनंदमय बना देंगे। मैंने उससे कहा कि उन्हें हमारे साथ शामिल होने की अनुमति दें। बच्चे कोलुक्कुमला जाने के लिए उत्साहित थे, जिसे मैंने पहले ही अपने मोबाइल में उन्हें दिखाया है। मैं और मेरी पत्नी सुबह जल्दी उठकर यात्रा के लिए तैयार हो गए और हमने बच्चों को जगाने की बहुत कोशिश की, लेकिन वे सोते रहे। आधे घंटे की कड़ी मेहनत के बाद- मैंने कहा कि हम (मैं और मेरी पत्नी) आप बच्चों के बिना कालुक्कुमला जा रहे हैं, हम वहाँ जाकर मौज-मस्ती करेंगे और वापस आकर यहाँ रहेंगे, अच्छी नींद ले लो। अचानक, सुबह के सूरज की तरह, वे दोनों जाग गए और सवारी के लिए तैयार हो गए। 10 मिनट के बाद, जीप अंबाडी आई और ड्राइवर मुरुगन ने हमें कार पर चढ़ने के लिए बुलाया। कार उस जोड़े को लेने के लिए 1 किमी चली, वे हाल ही में शादी के बंधन में बंधे थे और चंगनाश्शेरी से थे। ड्राइवर और जोड़ा हमारे साथ आसानी से घुलमिल गए और हमारे उनके साथ अच्छे संबंध थे। हरे-भरे चाय बागानों से होते हुए लगभग 35 मिनट की ऑफ रोड यात्रा के बाद, हम कालुक्कुमला चोटी पर पहुंचे, जहाँ जैसा कि हमने पहले ऑनलाइन देखा था, बादलों के स्तर से ऊपर पहाड़, हम उत्सुकता से सूरज के उगने और बादलों की शांत सुंदरता का इंतज़ार कर रहे थे। बहुत से लोग सूर्योदय का इंतज़ार कर रहे थे और बादलों के स्तर से ऊपर खड़े होने के लिए तैयार थे। हालाँकि, चूँकि सूरज पूर्व से उगता है, उस समय बादल नहीं थे और हम बादलों के स्तर से ऊपर खड़े होकर प्रकृति के दिल को छू लेने वाले दृश्य को देखने से चूक गए। खैर, हमने सूर्योदय और चोटी की ऊँचाई का भरपूर आनंद लिया और जोड़े के साथ वहाँ कुछ अच्छी तस्वीरें लीं। फिर हम सूर्योदय बिंदु के पास स्थित बाघ के पत्थर के पास पहुंचे, जो एक प्रसिद्ध स्थान है और इसमें फिल्म चार्ली में मीशपुलिमला के बारे में एक उद्धरण है, जो कोलुक्कुमला चोटी के पास है। वहाँ अच्छी तस्वीरें लेने के बाद, हमने वहाँ चाय-नाश्ता किया और वापस शुरुआती हिंदु पर लौट आए।

रास्ते में, ड्राइवर मुरुगन ने हमें वन विभाग

में अपनी हाल की अंशकालिक नौकरी के बारे में बताया। उन्होंने हमें बताया कि उन्होंने स्थानीय लोगों द्वारा जंगल के पेड़ों और ड्रग्स के अवैध परिवहन को पकड़ने के लिए वन अधिकारियों केसाथ भाग लिया है। ऐसी ही एक घटना 15 साल पहले हुई थी, उस समय अवैध गतिविधि के पीछे का व्यक्ति उनका एक दोस्त था और उन्होंने बताया कि उस समय वन अधिकारियों को ड्रग्स के इन अवैध परिवहन के मूल के बारे में जानकारी देने के लिए कड़ी पिटाई करनी पड़ी थी। वह वहीं पैदा हुए और पले-बढ़े हैं। उन्होंने बताया कि आजकल, कोलुक्कुमला में 250 जीपें चलती हैं और एक बार में लगभग 1500 पर्यटक होते हैं और वे प्रतिदिन 2-3 चक्कर लगाते हैं। वहाँ एक चेक पोस्ट है, जहाँ उन्हें प्रवेश करने के लिए एक राशि का भुगतान करना पड़ता है और यात्रा तभी शुरू होती है जब 250 जीपें पर्यटकों से पूरी तरह भरी होती हैं। शुरुआती बिंदु पर पहुंचने से पहले, हमें एक ज़िपलाइन मिली और हमने उसका भी आनंद लिया। फिर हम होटल लौट आए और वहां नाश्ता किया और पालक्कड़ लौट आए।

रास्ते में हमें मून्नार गैप रोड से गुजरना पड़ा, जो चार लाइन की सड़क है और पहाड़ों से भरी प्रकृति की सुंदरता है। पिछले दिन, हम रात के समय की वजह से सड़क और प्रकृति की असली सुंदरता नहीं देख पाए थे। बूंदाबांदी और कोहरे के कारण सड़क कुछ समय के लिए अदृश्य हो गई थी। उसके बाद, हम चिन्नार की ओर बढ़े, जहाँ मून्नार से सड़क एक बोतल-गर्दन की ओर जा रही थी और मुझे वहाँ सवारी का अच्छा अनुभव हुआ। कुछ समय में, सड़क बहुत ढलानदार थी कि अगर कोई वाहन हमारे सामने आ जाता, तो हमें वापस लौटना पड़ता ताकि वे जा सकें, क्योंकि सड़क और पैदल चलने वाला हिस्सा बहुत ऊँचा था और अगर हम पैदल चलने वाले हिस्से को छूते, तो वाहन का निचला हिस्सा क्षतिग्रस्त हो जाता। खैर, मैंने वाहन को कम जोखिम वाला बनाया और अपनी यात्रा जारी रखी। इस बीच, मेरी छोटी बच्ची अक्सर अनैच्छिक उल्टी करके मेरी पत्नी को परेशान करती थी। थोडी देर बाद, मैंने छोटे बच्चे को नारियल पानी पिलाने के लिए वाहन रोक दिया था। मैंने सड़क के पास कार रोकी और हम सभी खिड़की के शीशे ऊपर किए बिना बाहर निकल गए। अचानक, 3 आदमियों की सेना - मोटे, गंदे कपड़े पहने हुए हमारी कार के पास आई और मेरी पत्नी ने सुना कि उनकी आवाज़ कर्कश थी और वे ड्राइवर के जाने के बारे में चर्चा कर रहे थे। अचानक, मेरी पत्नी ने अपनी आँखों से एक चोर की ओर इशारा किया और मुझसे पूछा कि क्या सभी शीशे ले लिए गए हैं? फिर वे अचानक कार से चले गए और मैंने तुरंत खिड़की के शीशे उठा लिए। वहाँ नारियल का रस पीने के बाद, हम वहाँ से अचानक भागना चाहते थे। हालाँकि, मेरी छोटी बच्ची कार में बैठने से हिचकिचा रही थी और वह पूरे रास्ते पैदल चलकर पालक्कड़ पहुँचना चाहती थी। हम पर बहुत हँसी-मज़ाक हुआ। गहरी गरमागरम चर्चाओं के बाद और पालक्कड़ पहुंचने पर स्निकर्स चॉकलेट देगा बोलने के बाद, उसने मेरे सामने झुककर कार में प्रवेश किया। हम शाम को लगभग 7 बजे पालक्काड़ पहुंचे। मुझे लगता है कि मेरे परिवार के साथ यात्रा का अनुभव अच्छा रहा और उसके बाद सभी लोग तरोताजा महसूस कर रहे हैं। प्राकृतिक सुंदरता और रोमांचकारी यात्रा मुझे 'केरल के स्वर्ग' की खोज के लिए फिर से वहाँ जाने के लिए बुला रही है।

कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 50वीं बैठक

कोट्टयम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की 50वीं बैठक 29 अगस्त 2025 को रबड़ बोर्ड मुख्यालय में संपन्न हुआ। बैठक की अध्यक्षता समिति के अध्यक्ष एवं रबड़ बोर्ड के कार्यकारी निदेशक श्री एम. वसंतगेशन, आई.आर.एस. ने की। श्री निर्मल कुमार दुबे उप निदेशक (कार्यान्वयन) ने राजभाषा विभाग का प्रतिनिधित्व किया।

बैठक का शुभारंभ प्रार्थना गीत के साथ हुआ। जिसमें सदस्य सचिव, श्रीमती एम. श्रीविद्या ने अध्यक्ष, उप निदेशक (कार्या.) तथा सभी सदस्य कार्यालयों के अधिकारियों का स्वागत किया। इसके पश्चात उपस्थित सदस्यों ने परिचय दिया। अध्यक्षीय भाषण में श्री वसंतगेशन ऐ.आर.एस. ने कोट्टयम के सभी केंद्र सरकार कार्यालयों, बैंकों त-था सार्वजनिक उपक्रमों द्वारा राजभाषा गतिविधियों में संयुक्त प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि समिति एक ऐसा मंच है जहाँ सभी कार्यालय एक-दूसरे से सीखकर राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्टता ला सकते हैं।

श्री निर्मल कुमार दुबे, उप निदेशक (कार्यान्वयन) ने बैठक में सदस्य कार्यालयों से प्राप्त अर्धवार्षिक प्रगति रिपोर्टों की समीक्षा की और राजभाषा अधिनियम/नियमों के अनुपालन के महत्व पर विस्तृत चर्चा की। उन्होंने प्रत्येक कार्यालय की रिपोर्ट का सूक्ष्म परीक्षण कर कमियों को दूर करने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश प्रदान किए। उप निदेशक (कार्यान्वयन) ने उन कार्यालयों की सराहना भी की, जिन्होंने अपने कार्यालयों में राजभाषा का प्रशंसनीय अनुपालन किया है। श्रीमती गीता जी पी, हिंदी अनुवादक, भारत संचार निगम लिमिटेड ने कृतज्ञता ज्ञापित की।

कोट्टयम नराकास के अधीन राजभाषा ट्रॉफियों का वितरण

वर्ष 2024-25 के दौरान राजभाषा कार्यान्वयन में उत्कृष्ट प्रदर्शन किए सदस्य कार्यालयों को राजभाषा ट्रॉफियों से सम्मानित किया गया। इस वर्ष मूल्यांकन में यह विशेष ध्यान रखा गया कि विभिन्न कार्यालयों में हिंदी स्टाफ की उपलब्धता की स्थिति क्या है। इसी के आधार पर बैंक और अन्य कार्यालयों के लिए अलग-अलग श्रेणियों में पुरस्कार प्रदान किए गए।

1. **बैंक श्रेणी** (हिंदी पदधारी वाले)
   प्रथम स्थान : ***यूनियन बैंक ऑफ इंडिया***
2. **बैंक श्रेणी** (जहां हिंदी पदधारी नहीं है)
   प्रथम स्थान : ***भारतीय स्टेट बैंक***
   द्वितीय स्थान : ***केनरा बैंक***
3. **कार्यालय श्रेणी** (हिंदी पदधारी वाले)
   प्रथम स्थान : ***बीएसएनएल***
   द्वितीय स्थान : ***केंद्रीय विद्यालय***
   तृतीय स्थान : ***राष्ट्रीय होम्योपैथी मानसिक स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान***
4. **कार्यालय श्रेणी** (जहां हिंदी पदधारी नहीं है)
   प्रथम स्थान : ***महालेखाकर कार्यालय***
   द्वितीय : ***कर्मचारी भविष्य निधि संगठन***
   तृतीय : ***भारतीय खाद्य निगम***
   केंद्रीय कर एवं उत्पाद शुल्क

बैठक में सभी विजेता कार्यालयों द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना की गई तथा अन्य सदस्य कार्यालयों को भी राजभाषा कार्य में इसी प्रकार सक्रिय योगदान देने के लिए प्रेरित किया गया।

रसोई घर ठंडी राइस पुडिंग

सामग्री -

दूध	- $^1/_2$ लीटर
चावल	- 1 मुट्ठी
चीनी	- $1^1/_2$ बड़ा चम्मच
हरी इलायची	- 3-4 पिसी
ठंडी क्रीम	- 1 प्याला
अनार व सेब का लाल रंग का जूस	- 2 प्याले
बारीक कटा कोई भी मौसमी फल	- 1 प्याला
जिलेटिन	- $1^1/_2$ छोटा चम्मच

बनाने की विधि

1. इलायची डालकर दूध को उबालने के लिए रखें। बीच में कड़छी डाल दें, ताकि दूध उबलकर बाहर न निकले।
2. चावल साफ करके व धोकर डालें व लगातार चलाते हुए पकने दें।
3. जब चावल गल जाएँ व खीर गाढ़ी हो जाए, तब चीनी डालकर, मिलाकर ठंडी करने के लिए रखें।
4. आधी कटोरी पानी गुनगुना करें व उसमें जिलेटिन डालकर मिलाएँ व अच्छी तरह से घोल लें व जूस में डालकर मिलाएँ तथा फ्रीजर में रखकर सैट होने दें। अगर जिलेटिन न डालना चाहें तो जूस को यों ही जमा लें।
5. ठंडी खीर में ठंडी क्रीम मिलाएँ व जमा जूस तोड़कर, बिखरेकर डालें, ताजे कटे मौसमी फल डालकर पुडिंग सैट करें व खाने के बाद परोसें।

आइए हिंदी में बात करें

वार्तालापः पहली मुलाकात

(सड़क पर)

अनुः नमस्ते! क्या आप एरणाकुलम गेस्ट हाउस का रास्ता जानते हैं? मैं यहाँ पहली बार आई हूँ, थोड़ा रास्ता समझ नहीं आ रहा।

सीमाः नमस्ते! हाँ, मैं भी उसी दिशा में जा रही हूँ। साथ चलिए, मैं आपको रास्ता दिखाती हूँ।

अनुः बहुत धन्यवाद! मैं सच में थोड़ी घबरा गई थी।

सीमाः कोई बात नहीं। नए शहर में आना और रास्ता ढूँढ़ना थोड़ा मुश्किल होता है। आप यहाँ किस काम से आई हैं?

अनुः मैं रबड़ बोर्ड की एक बैठक (मीटिंग) के लिए आई हूँ। आप?

सीमाः मैंने अभी दो दिन पहले ही रबड़ बोर्ड में कनिष्ठ सहायक के पद पर कार्यग्रहण किया है। यह मेरी पहली नौकरी है।

अनुः वाह! बधाई हो। रबड़ बोर्ड एक अच्छा कार्यालय है। आपको वहां काम करके कैसा लग रहा है?

सीमाः धन्यवाद! अभी शुरुआत ही हुई है, तो सीखने की प्रक्रिया चल रही है। काम थोड़ा चुनौतीपूर्ण है, पर सभी पदधारी बहुत मददगार हैं।

अनुः अच्छा लगा यह सुनकर। मैं बैंक में काम करती हूं। मुझे अक्सर यहाँ बैठक के लिए आना पड़ता है।

सीमाः बहुत अच्छा! बैंक में काम होना बड़ी जिम्मेदारी की बात है। मैं भी प्रयास करूँगी कि जल्द ही अपने काम में दक्षता हासिल कर सकूँ।

अनुः इसी लगन से काम करो तो सफलता निश्चित है। शुरुआती दिनों में फाइलिंग, इनवर्ड-आउटवर्ड रजिस्टर संभालना, और कार्यालयीन कागजातों का प्रबंधन करना पड़ता है।

सीमाः जी हाँ, फिलहाल वही कार्य मुझे सौंपे गए हैं। मुझे उम्मीद है कि जल्द ही मुझे कंप्यूटर और पत्राचार का भी काम मिलेगा।

अनुः बिलकुल मिलेगा। और हाँ, कार्यालय में सभी एक-दूसरे की मदद करते हैं, इसलिए यदि कभी कोई दिक्कत आए तो निःसंकोच पूछ लेना।

सीमाः आपसे मिलकर मुझे बहुत अच्छा लगा।

अनुः मुझे भी, ठीक है तो फिर कहीं मिलेंगे।

सेवानिवृत्तियां 2025

अप्रैल

डॉ.जेस्सी एम डी
संयुक्त निदेशक (कृषि/मृदा)

चाक्को ई ए
उप निदेशक (का व प्र)

एम गोपालकृष्णन
उप रबड़ उत्पादन आयुक्त

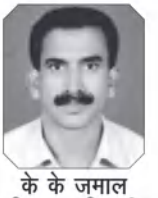

के के जमाल
विकास अधिकारी

संतोष वी जी
विकास अधिकारी

मोलिकुट्टी पुलिक्कल
विकास अधिकारी

अप्रैल

सूसन कुरुविला
विकास अधिकारी

राजीवन के
विकास अधिकारी

मोहनन के
विकास अधिकारी

जी सुनील कुमार
सहायक निदेशक (रा भा)

पी सी शांतम्मा
वैज्ञानिक अधिकारी

आर मधु
लेखा अधिकारी

अप्रैल

सुधाकुमारी एस
अनुभाग अधिकारी

के एन गीता
अनुभाग अधिकारी

अखिलेश्वरी एम
विपणन अधिकारी

सेलिन मात्यु
सहायक विकास अधिकारी

चंद्रन वी एम
प्रक्षेत्र अधिकारी

अबूबक्कर मुल्लनमाडक्कल
कनिष्ठ प्रक्षेत्र अधिकारी

अप्रैल

सांबशिवन टी जी
क.रबड़ टापिंग प्रशिक्षण अधिकारी

गोपालकृष्णन नायर एम
वरिष्ठ अभिलेखपाल/प्रयोगशाला परिचर

तोमसण जोसफ
वरिष्ठ रबड़ टापिंग निदर्शक

सुनिलकुमार एम आर
काउंटर क्लर्क

पी आर पद्मनाभन
परिचर

वरुगीस तोमस
परिचर

मई

जयश्री गोपालकृष्णन
वैज्ञानिक डी

षीला एल
उप रबड़ उत्पादन आयुक्त

वी पी अजितकुमार
उप निदेशक (वित्त)

जोणी सेबास्टचन
उप निदेशक (बा आ)

जयचंद्रन काप्पाडन
विकास अधिकारी

लाली ए के
विकास अधिकारी

मई

मिनिमोल टी के
विकास अधिकारी

मेरियम्मा पी तोमस
विकास अधिकारी

षोबी जोसफ
विकास अधिकारी

श्रीकुमार वी के
विकास अधिकारी

एम एस मिनिमोल
विकास अधिकारी

जोस ए जे
विकास अधिकारी

सेवानिवृत्तियां 2025

मई

शिवरामन पी आर
विकास अधिकारी

जोय जोण
विकास अधिकारी

नासर के ए
विकास अधिकारी

श्रीकुमार वी आर
विकास अधिकारी

पी ए रघु
विकास अधिकारी

बर्णार्ड डी कुन्हा
विकास अधिकारी

मई

अनिल पी
सिविल अभियंता

सजी के के
सहायक सचिव

लिस्सी ज़क्करिया
सहायक सचिव

ओमना के के
अनुभाग अधिकारी

जयशांती पी बी
अनुभाग अधिकारी

मिजो जेकब
सहायक वैज्ञानिक अधिकारी

मई

लीना के के
सहायक वैज्ञानिक अधिकारी

अरुणा जोर्ज
सहायक विकास अधिकारी

डॉ.पी सिंधु
सहायक विकास अधिकारी

एम टी वर्गीस
सहायक सुरक्षा अधिकारी

वी के ईश्वरन नंबूतिरी
फोरमैन

शैलजा कुमारी पी के
सहायक

मई

मिनिकुमारी
सहायक

प्रियंका प्रभाकर तारी
सहायक

प्रसाद वी आर
व.अभिलेखपाल/प्रयोगशाला परिचर

पी एन राजम्मा
व.अभिलेखपाल/प्रयोगशाला परिचर

वर्गीस तोप्पिल
व.अभिलेखपाल/प्रयोगशाला परिचर

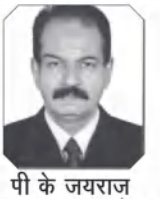

पी के जयराज
स्टाफ कार चालक ग्रेड 1

मई

मनोज कुमार के
स्टाफ कार चालक ग्रेड 2

जून

रश्मी रेखा मजुमदार
उप रबड़ उत्पादन आयुक्त

सयेद तारीख हुसैन
स्टाफ कार चालक (वि ग्रेड)

माधव महांकुड
स्टाफ कार चालक ग्रेड 1

जुलाई

आनंदकुमारी आई एस
विकास अधिकारी

जोय वर्गीस
प्रक्षेत्र अधिकारी

अगस्त

सुबाष चंद्र मल्लिक
उप निदेशक (से मा)

हरिदास के
विकास अधिकारी

सितंबर

मनोजीत साहा
उप निदेशक (का व प्र)

सुरेष बाबु पी वी
सहायक सुरक्षा अधिकारी

शुभकामनाएं

हिंदी दिवस समारोह

एन आर ई टी सी अगर्तला में 24 सितंबर 2025 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री राम प्रकाश यादव, हिंदी प्राध्यापक, हिंदी शिक्षण योजना, अगर्तला प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्री सली एन, संयुक्त रबड़ उत्पादन आयुक्त, एनआरईटीसी अगर्तला ने समारोह की अध्यक्षता की। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। डॉ.देबब्रत राय, प्रभारी अधिकारी, आरआरएस अगर्तला ने धन्यवाद ज्ञापन किया। अगर्तला में स्थित कार्यालय याने एनआरईटीसी, प्रादेशिक अनुसंधान स्टेशन, प्रादेशिक कार्यालय और बोर्ड के कंपनियों के पदधारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - शांता कर्मकार, कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1
द्वितीय - अमित कुमार यादव, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - ब्रजेष कुमार मेहरा, वैज्ञानिक अधिकारी

II निबंध लेखन

प्रथम - ब्रजेष कुमार मेहरा, वैज्ञानिक अधिकारी
द्वितीय - अमित कुमार यादव, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - तुलु देबबर्मा, क. प्रक्षेत्र अधिकारी

III. भाषण

प्रथम - चित्त रंजन देबनाथ, क.अभियंता (सिविल)
द्वितीय - राजु डे, कनिष्ठ सहायक
तृतीय - अमित कुमार यादव, क्षेत्रीय अधिकारी

IV. कवितापाठ

प्रथम - संध्या देब, क. सहायक ग्रेड 1
द्वितीय - कालिपदा शिब, सर्वेक्षक
तृतीय - स्वपना दास, अभिलेखपाल/प्र परिचर

V. हिंदी गीत

प्रथम - रतना नाथ, क. सहायक ग्रेड 1
द्वितीय - रंजित सरकार, इंस्ट्रुमेंट तकनीशियन
तृतीय - शांता कर्मकार, कनिष्ठ सहायक ग्रेड 1

प्रादेशिक कार्यालय कांजंगाड में 30 सितंबर 2025 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्री बालन एम सेवानिवृत्त हायर सेकेंडरी स्कूल अध्यापक, दुर्गा हायर सेकेंडरी स्कूल प्रतियोगिताओं में निर्णायक रहे। श्री एम पी पवित्रन नंबियार, प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - षैनी रेजी, सहा. विकास अधिकारी
द्वितीय - राकेष टी पी, रबड़ टापिंग निदर्शक
तृतीय - निखिला एन के, क. सहायक ग्रेड 1

II. कवितापाठ

प्रथम - निखिला एन के, क. सहायक ग्रेड 1
द्वितीय - निमिष भूषण सी एन, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - षैनी रेजी, सहा. विकास अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय काजलगांव में 7 अक्तूबर 2025 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती कल्पना छेत्री, हिंदी अध्यापिका, च्रियांग पब्लिक स्कूल, काजलगांव प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्री गुटल बरगयारी, प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। इस अवसर पर निर्णायक, श्रीमती कल्पना छेत्री ने रबड़ बोर्ड के सभी पदधारियों को हिंदी दिवस आयोजित करने के लिए बधाई देते हुए भाषण दिया। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। श्री बिमल चंद्र नाथ, सर्वेक्षण अधिकारी ने कृतज्ञता ज्ञापन किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - बिजित खुंगुर बारो, कनिष्ठ सहायक
द्वितीय - मनिका कुंडु, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - शहिदुल इस्लाम, युवा पेशेवर

II. कवितापाठ

प्रथम - दिब्यज्योति थाकुरिया, अनुभाग अधिकारी
द्वितीय - लौली नारज़ारी, युवा पेशेवर
तृतीय - उत्पल हज़ोवरी, टापिंग निदर्शक

III. भाषण

प्रथम - राजीब लोसन बसुमातरी, सहा.विकास अधिकारी
द्वितीय - न्यूटन ब्रह्मा, युवा पेशेवर
तृतीय - देबजनी मंडल, क्षेत्रीय अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय कोट्टारक्करा में 30 अक्तूबर 2025 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती विजयलक्ष्मी, अध्यापिका, देवी विलासम वी एच एस एस, मायलम, कोट्टारक्करा प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्रीमती षैनी के पोन्नन, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - राहुल आर वी, कनिष्ठ सहायक
द्वितीय - रवि रंजन कुमार, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - अर्क प्रभा सरकार, क्षेत्रीय अधिकारी

II. कवितापाठ

प्रथम - रवि रंजन कुमार, क्षेत्रीय अधिकारी
द्वितीय - चित्रा एस, परिचर
तृतीय - राहुल आर वी, कनिष्ठ सहायक

प्रादेशिक कार्यालय अडूर में 29 सितंबर 2025 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती मिनी, हिंदी अध्यापिका, होली एंजल्स इंग्लिश मीडियम हायर सेकेंडरी स्कूल, अडूर प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्रीमती जयश्री एम आर, प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री अनिलकुमार पी एस, सहायक विकास अधिकारी ने कृतज्ञता ज्ञापित की। प्रभारी उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - अजिता के, स. विकास अधिकारी

द्वितीय - षाजिनी आर, क.सहायक ग्रेड 1

तृतीय - आदित्या सोमशेखरपिल्लै, क. सहायक

II. कवितापाठ

प्रथम - रामजीत एन पी, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - देगुला नागभूषण, क्षेत्रीय अधिकारी

तृतीय - अजिता के, स. विकास अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय नेडुमंगाड में 19 सितंबर 2025 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती बिंदुकला, हाई स्कूल हिंदी अध्यापिका प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। डॉ. श्रीरंजिनी देवी पिल्लै, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। श्रीमती सुमा एम एस, सहायक विकास अधिकारी ने सभी का स्वागत किया। श्रीमती लताकुमारी, अनुभाग अधिकारी ने कृतज्ञता ज्ञापित की। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - राहुल कुमार, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - लताकुमारी, अनुभाग अधिकारी

तृतीय - सुमा एम एस, स.विकास अधिकारी

II. कवितापाठ

प्रथम - बेस्टा सुरेष, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - अनफ्रैंकलिन रसेल, सर्वेक्षक

तृतीय - सुमा एम एस, स.विकास अधिकारी

III. भाषण

प्रथम - श्रीलता एम, क.सहायक ग्रेड 1

द्वितीय - अभिजित, क्षेत्रीय अधिकारी

तृतीय - राहुल कुमार, क्षेत्रीय अधिकारी

प्रादेशिक कार्यालय पाला में 26 सितंबर 2025 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती मंजु के एम, सेवानिवृत्त हाई स्कूल अध्यापिका, पाला प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्री जोणसन के जी, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - वीरेश डी ए, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - बीना जोसफ, क.सहायक ग्रेड 1

तृतीय - मनब बर्मन, क्षेत्रीय अधिकारी

II. कवितापाठ

प्रथम - मनब बर्मन, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - योगेश बी टी, क्षेत्रीय अधिकारी

तृतीय - वीरेश डी ए, क्षेत्रीय अधिकारी

III. भाषण

प्रथम - मनब बर्मन, क्षेत्रीय अधिकारी

द्वितीय - सुजा एस नायर, सहायक विकास अधिकारी

तृतीय - बीना जोसफ, क.सहायक ग्रेड 1

आंचलिक कार्यालय गुआहाटी में 17 अक्तूबर 2025 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती शर्मिला टाई, सहायक निदेशक, केंद्रीय हिंदी शिक्षण योजना प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्री रामचंद्रन पी के, संयुक्त रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। श्री बापधन डेका, सहायक सचिव ने सभी

का स्वागत किया। निर्णायक ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। श्री उमेश चंद्रा, प्रभारी अधिकारी, प्रादेशिक अनुसंधान स्टेशन, गुआहाटी ने कृतज्ञता ज्ञापित की। गुआहाटी में स्थित आंचलिक कार्यालय, प्रादेशिक कार्यालय और प्रादेशिक अनुसंधान स्टेशन के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - शिखा डेका, आशुलिपिक ग्रेड 1
द्वितीय - बिंदु पी एस, सहायक
तृतीय - अंकिता दास, युवा पेशेवर

II. निबंध लेखन

प्रथम - प्रीतिस्मिता नायक, क्षेत्रीय अधिकारी
द्वितीय - बापधन डेका, सहायक सचिव
तृतीय - दीपज्योति मेधी, युवा पेशेवर

III. कवितापाठ

प्रथम - पिंकी दैमारी, स. विकास अधिकारी
द्वितीय - कृष्णा दास, विकास अधिकारी
तृतीय - नितुमनी गोगोई, बाह्य स्रोत

IV. भाषण

प्रथम - कालींद्र डेका, स.विकास अधिकारी
द्वितीय - अंकिता दास, युवा पेशेवर
तृतीय - प्रीतिस्मिता नायक, क्षेत्रीय अधिकारी

V. हिंदी गीत

प्रथम - दीपज्योति मेधी, युवा पेशेवर
द्वितीय - पिंकी दैमारी, स. विकास अधिकारी
तृतीय - बापधन डेका, सहायक सचिव

प्रादेशिक कार्यालय कांजिरप्पल्ली में 14 अक्तूबर 2025 को हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया। श्रीमती मंजु के एम, सेवानिवृत्त हिंदी अध्यापिका प्रतियोगिताओं में निर्णायक रही। श्रीमती जयमोल सी एल, उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने समारोह की अध्यक्षता की। उप रबड़ उत्पादन आयुक्त ने विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। कार्यालय के कर्मचारियों ने बडी दिलचस्पी से इनमें प्रतिभागिता कीं। विजयियों के नाम इस प्रकार हैं:-

I टिप्पण एवं आलेखन

श्री/श्रीमती

प्रथम - अन्षार के सलीम, कनिष्ठ सहायक
द्वितीय - षेर्ली कुर्यन, सहायक
तृतीय - सौमिक डे, क्षेत्रीय अधिकारी

II. भाषण

प्रथम - बिनोय पी पी, स. विकास अधिकारी
द्वितीय - धनुष कोटि आर एम, क्षेत्रीय अधिकारी
तृतीय - सालिकुट्टी जोसफ, स.विकास अधिकारी

III. कवितापाठ

प्रथम - सालिकुट्टी जोसफ, स.विकास अधिकारी
द्वितीय - बिनोय पी पी, स. विकास अधिकारी
तृतीय - जोबिन वी कुमार, क्षेत्रीय अधिकारी

अर्थशास्त्र
नोबेल पुरस्कार

जेम्स मैकगिल बुखानन

पुरस्कार वर्ष : 1986
जन्म : 3 अक्तूबर, 1919
मृत्यु : 9 जनवरी, 2013
राष्ट्रीयता : अमरीकी

इस अमरीकी अर्थशास्त्री ने जिस राजनीतिक-आर्थिक सिद्धांत का प्रतिपादन किया उसे 'पब्लिक च्वायस थ्योरी' कहते हैं। इसमें उन्होंने बताया है कि किस प्रकार राजनीतिज्ञ और सरकारी नौकर जनता की सेवा अथवा भलाई की बजाय अपने स्वार्थों का अधिक ध्यान रखते हैं।

राबर्ट सोलो

पुरस्कार वर्ष : 1987
जन्म : 23 अगस्त, 1924
मृत्यु : 21 दिसंबर, 2023
राष्ट्रीयता : अमरीकी

इस अमरीकी अर्थशास्त्री ने गणितीय उदाहरण से यह स्पष्ट किया कि दीर्घकालिक विकास का आधार तकनीकी उन्नति है। वह केवल पूंजी और श्रम वृद्धि से संभव नहीं। यही कारण था इनको नोबेल पुरस्कार दिये जाने का।

मौरिस अलाइस

पुरस्कार वर्ष : 1988
जन्म : 31 मई, 1911
मृत्यु : 9 अक्तूबर, 2010
राष्ट्रीयता : फ्रेंच

फ्रांस के इस अर्थशास्त्री ने उदार तथा मुक्त बाज़ार दृष्टिकोण रखा। इसकी सफलता के लिए उन्होंने बाजार और उपलब्ध साधनों का योग्यतापूर्वक उपयोग करने के सिद्धांत का प्रतिपादन किया।

त्रिग्वे मैगनस हावेल्मो

पुरस्कार वर्ष : 1989
जन्म : 13 दिसंबर, 1911
मृत्यु : 28 जुलाई, 1999
राष्ट्रीयता : नार्वियन

नार्वे के इस अर्थशास्त्री ने बताया कि आर्थिक सिद्धांतों का कैसे परीक्षण किया जा सकता है। यह रेगनर फ्रिश्च के विद्यार्थी थे जिन्हें जान टिनबर्गन के साथ अर्थशास्त्र का पहला नोबेल पुरस्कार प्राप्त हुआ था।

मेर्टन एच. मिलर

पुरस्कार वर्ष : 1990
जन्म : 16 मई, 1923
मृत्यु : 3 जून, 2000
राष्ट्रीयता : अमरीकी

इन्होंने कारपोरेट (सामूहिक वित्त उपयोग) फाइनेन्स सिद्धांत पर विशेष कार्य किया। इन्हें हैरी मैक्स मार्कोविज और विलियम एफ. शार्प के साथ 1990 का अर्थ संबंधी नोबेल पुरस्कार दिया गया।

Penta Offset, KTM. 94472 59201